राजस्थान

कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (CET)

HANDWRITTEN NOTES

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान CET

(RSMSSB)

(COMMON ELIGIBILTY TEST)

GRADUATION LEVEL

[भाग -3] भारत का भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

CET

(Graduation level)

भाग - 3

भारत का भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान CET (स्नातक स्तर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान CET (स्नातक स्तर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online order करें ➡ https://bit.ly/rajasthan-cet-notes graduation

whatsapp करें - ➡ https://wa.link/kmk3lu

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

भारत का भूगोल

1. भारत की स्थिति व विस्तार 1

2. प्रमुख स्थलाकृतियाँ 10

- पर्वत, पठार, मरुस्थल एवं मैदान

3. जलवायु एवं मानसून तंत्र 36

4. प्रमुख नदियाँ, झीलें एवं बांध 51

5. वन एवं वन्य जीव जन्तु, एवं अभ्यारण्य 70

6. प्रमुख फसलें 81

- गेहूँ, चावल, कपास, गन्ना, चाय एवं कॉफी

7. प्रमुख खनिज 93

- लौह अयस्क, मैंगजीन, बॉक्साइट एवं अभ्रक

8. ऊर्जा संसाधन – परम्परागत एवं गैर परम्परागत 99

9. प्रमुख उद्योग एवं औद्योगिक प्रदेश 108

10. राष्ट्रीय राजमार्ग, परिवहन के साधन एवं व्यापार 124

भारतीय संविधान

1. भारतीय संविधान की प्रकृति 137

- संविधान सभा
- विशेषताएं

2. प्रस्तावना (उद्देशिका) 146

3. मौलिक अधिकार 151

4. राज्य के नीति निदेशक तत्व (सिद्धांत) 163

5. मौलिक कर्तव्य 168

6. संविधान संशोधन 176

7. आपातकालीन प्रावधान 185

8. जनहित याचिका 187

9. राष्ट्रपति 190

10. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद् 213

11. संसद 222

12. उच्चतम न्यायालय 236

13. राज्य कार्यपालिका 245

- राज्यपाल
- मुख्यमंत्री
- मंत्रिपरिषद

14. निर्वाचन आयोग 254

15. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक 260

16. मुख्य सूचना आयुक्त 263

17. लोकपाल 269

18. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग 272

19. स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज 274

भारतीय अर्थव्यवस्था

1. बजट निर्माण 287

2. बैंकिंग 299

3. लोक - वित्त 326

4. वस्तु एवं सेवा कर 332

5. राष्ट्रीय आय 338

6. संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान 348

7. राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ 350

8. सब्सिडी एवं लोक वितरण प्रणाली 354

9. ई-कॉमर्स 366

10. भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र 373

11. हरित क्रान्ति, श्वेत क्रान्ति एवं नीली क्रान्ति 380

12. पंचवर्षीय योजनाएं एवं नियोजन प्रणाली 388

13. प्रमुख आर्थिक समस्याएं एवं सरकार की पहलें 389

भारत का भूगोल

अध्याय – I

भारत की स्थिति व विस्तार

- आर्यों की भरत नाम की शाखा अथवा महामानव भारत के नाम पर हमारे देश का नामकरण भारत हुआ ।
- प्राचीन काल में आर्यों की भूमि के कारण यह आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था ।
- ईरानियों ने सिन्धु नदी के तटीय निवासियों को हिन्दू एवं इस भू - भाग को हिन्दुस्तान का नाम दिया ।
- रोम निवासियों ने सिन्धु नदी को इण्डस तथा यूनानियों ने इण्डोस व इस देश को इण्डिया कहा । यही देश विश्व में आज भारत के नाम से विख्यात है ।

भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. (1269219.34 वर्ग मील) है।
- कर्क रेखा अर्थात् 23½ उत्तरी अक्षांश हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है यह रेखा भारत को दो भागों में विभक्त करती है (1) उत्तरी भारत , जो शीतोष्ण कटिबन्ध में फैला है तथा (2) दक्षिणी भारत , जिसका विस्तार उष्ण कटिबन्ध है।

कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों क्रमशः गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प. बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम है।

NOTE- राजस्थान की राजधानी जयपुर, त्रिपुरा की राजधानी अगरतल्ला व मिजोरम की राजधानी आइजोल कर्क रेखा के उत्तर में तथा शेष राज्यों की राजधानियाँ दक्षिण में स्थित है।

NOTE – मणिपुर कर्क रेखा के सर्वाधिक उत्तर में स्थित है।

प्रश्नः- निम्न में से कौन सा भारत का राज्य कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है ? (RAS PRE. 2015)

(1) त्रिपुरा (2) मणिपुर

(3) मिजोरम (4) झारखण्ड

उत्तर :- (2)

NOTE- कर्क रेखा राजस्थान से न्यूनतम व मध्यप्रदेश से सर्वाधिक गुजरती है।

- भारत सम्पूर्ण विश्व का लगभग 1/46 वाँ भाग है।
- क्षेत्रफल के अनुसार रूस , कनाडा , चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राज़ील व ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत का विश्व में 7वाँ स्थान है।
- यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
- भारत का आकार जापान से नौ गुना तथा इंग्लैण्ड से 14 गुना बड़ा है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है।
- भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत (मुख्य भूमि) का दक्षिणतम बिन्दु - कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु) है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) है।
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है। यह मानक समय रेखा भारत के 5 राज्यों क्रमशः उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा व आंध्रप्रदेश है।
- कर्क रेखा व मानक रेखा छत्तीसगढ़ राज्य में एक दुसरे को काटती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

भारत की तटीय / समुद्री सीमा = तट रेखा की लम्बाई 7516.6 मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

कुल राज्य = 9 [i. पश्चिमी तट के राज्य- गुजरात (राज्यों में सबसे लंबी तट रेखा),

महाराष्ट्र, गोवा (राज्यों में सबसे छोटी तट रेखा), कर्नाटक व केरल ii. पूर्वी तट के राज्य प. बंगाल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु] कुल केंद्र शासित प्रदेश= अंडमान निकोबार (सर्वाधिक), लक्षद्वीप, दमन व दीव तथा (न्यूनतम) पुद्दुचेरी

- भारत के 16 राज्य व 2 केंद्र शासित प्रदेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं ।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु
• दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) • उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख) • पश्चिमी बिन्दु- गोहर माता (गुजरात) • पूर्वी बिन्दु- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश) • मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख
अफगानिस्तान (1)	लद्दाख
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत - बांग्लादेश सीमा	4096.7 किमी.
भारत-चीन	3488 किमी.
भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत – अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित है)

❖ **पड़ोसी देशों के साथ भारत का सीमा विस्तार व सीमा संबंधी विवाद**

I. भारत – बांग्लादेश

✓ भारत के 5 राज्य पश्चिम बंगाल(सर्वाधिक), असम (न्यूनतम), मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम बांग्लादेश के साथ सीमा बनाते हैं।

✓ भारत का त्रिपुरा राज्य बांग्लादेश से तीनों ओर से घिरा हुआ है ।

✓ भारत के असम राज्य बांग्लादेश के साथ दो बार सीमा बनाता है ।

✓ **जीरोलाइन-** बांग्लादेश व भारत के मध्य की सीमा जीरो लाइन कहलाती है।

बांग्लादेश व भारत के मध्य विवाद

✓ **तीस्ता नदी विवाद**

इस नदी का उद्गम सिक्किम हिमालयी क्षेत्र के पाहुनरी ग्लेशियर से होता हैं । यह सिक्किम, पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश की महत्वपूर्ण नदी मानी जाती हैं। भारत के सिक्किम एवं पश्चिम बंगाल की यह जीवन रेखा मानी जाती हैं। यह नदी दक्षिण की ओर प्रवाहित होते हुए बांग्लादेश की जमुना (ब्रह्मपुत्र) में मिल जाती हैं। यह सिक्किम एवं पश्चिम बंगाल की सीमा भी बनाती हैं। 1815 में नेपाल के राजा और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच तीस्ता नदी के पानी को लेकर समझौता हुआ। इस समझौते के बाद नेपाल ने तीस्ता पर बड़ा नियंत्रण अंग्रेजों (ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी) को सौंप दिया। यही नियंत्रण आजादी तक बना रहा। 1971 के बाद (बांग्लादेश के निर्माण के बाद) तीस्ता जल को लेकर पुनर्विचार की मांग उठी। भारत एवं बांग्लादेश के बीच तीस्ता नदी को लेकर पहली बार एक तदर्थ समझौता हुआ था। इस

समझौते के तहत बांग्लादेश को 36 प्रतिशत और भारत को 39 प्रतिशत पानी के उपयोग का अधिकार दिया गया तथा 25 प्रतिशत जल का आवंटन नहीं किया गया। 2011 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ढ़ाका दौरे पर गये और तीस्ता के जल के बंटवारे को लेकर एक नये फार्मूले पर सहमति भी बनी। लेकिन पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के विरोध की वजह से इस पर हस्ताक्षर नहीं हो सका था।

✓ **फरक्का बाँध विवाद**

भारत और बांग्लादेश के बीच सन् 1996 में गंगा जल संधि हुई थी। यह संधि भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा और शेख हसीना के मध्य हुई। इस बाँध का निर्माण वर्ष 1975 में पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में गंगा नदी पर किया गया था। जो संधि दोनों देशों के बीच हुई उसके तहत अगर पानी की उपलब्धता 75,000 क्यूसेक बढ़ती है तो भारत के पास 40,000 क्यूसेक पानी लेने का अधिकार है और अगर फरक्का बांध में 70,000 क्यूसेक से कम पानी है तो फिर बहाव को दोनों देशों के बीच बांटा जाएगा। इस समझौते की अवधि 30 साल की है जो 2026 में पूर्ण हो जाएगी।

✓ **तिपाईमुख परियोजना विवाद**

मणिपुर में 6 हजार करोड़ रुपए की लागत से बराक नदी पर प्रस्तावित तिपाईमुख पनबिजली परियोजना का विरोध पड़ोसी देश बांग्लादेश करता रहा है।

✓ **फेनी नदी विवाद**

यह नदी भारत बांग्लादेश की सीमा पर स्थित है। इसका उद्गम दक्षिणी त्रिपुरा ज़िले में स्थित है। इस नदी के जल के बँटवारे का विवाद काफी समय से लंबित है।

✓ **चकमा और हाजोंग शरणार्थी समस्या**

चकमा और हाजोंग शरणार्थी मूलतः पूर्वी पाकिस्तान के चटगांव हिल ट्रैक्ट्स (Chittagong Hill Tracts) के निवासी थे। परन्तु कर्नाफुली (Karnaphuli) नदी पर बनाए गए कैपटाई बांध (Kaptai dam) के कारण जब वर्ष 1960 में उनका क्षेत्र जलमग्न हो गया तो उन्होंने अपने मूल स्थान को छोड़कर भारत में प्रवेश किया।

दरअसल, चकमा बौद्ध हैं, जबकि हाजोंग हिन्दू हैं। इन दोनों जनजातियों ने बांग्लादेश में कथित तौर पर धार्मिक उत्पीड़न का सामना किया तथा असम की लुशाई पहाड़ी (जिसे अब मिज़ोरम कहा जाता है) के माध्यम से भारत में प्रवेश किया।

इसके पश्चात् भारत सरकार द्वारा अधिकांश शरणार्थियों को उत्तर-पूर्व सीमान्त एजेंसी (जिसे अब अरुणाचल प्रदेश कहा जाता है) में बनाए गए राहत शिविरों में भेज दिया गया।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, केवल अरुणाचल प्रदेश में ही 47,47। चकमा लोग रह रहे हैं।

चकमा और हाजोंग जनजातियाँ मुख्यतः पूर्वोत्तर भारत, पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश और म्याँमार में पाई जाती हैं।

✓ **न्यू मूर द्वीप**

भारत और बांग्लादेश के बीच बंगाल की खाड़ी में स्थित न्यू मूर द्वीप को लेकर दोनों के मध्य विवाद हैं। इस द्वीप को भारत में न्यू मूर या पुर्बाशा कहा जाता है जबकि बांग्लादेश में इसे दक्षिण तलपट्टी के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में यह द्वीप लगभग जल मग्न हो गया है।

✓ **तीन बीघा गलियारा**

2. भारत – चीन

✓ भारत के 4 राज्य हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम (न्यूनतम), अरुणाचल प्रदेश व 1 केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख (सर्वाधिक) चीन के साथ सीमा बनाते हैं।

✓ **मैकमोहन रेखा –**

चीन व भारत के मध्य की सीमा रेखा है। इसका निर्धारण अप्रैल, 1914 में किया गया था।

✓ **सीमा विवादः**

लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल-

LAC एक 3488 किलोमीटर लंबी सीमा रेखा है जो भारत और चीन को अलग करती है। भारत और चीन के बीच यह विवादित सीमा, जिसे वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के रूप में भी जाना जाता है, को तीन क्षेत्रें में विभाजित किया

• अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भारत का अक्षांशीय व देशांतरिय विस्तार क्रमशः हैं-

(A) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पश्चिमी देशान्तर तक

(B) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक

(C) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' दक्षिणी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक

(D) 68°7' उत्तरी अक्षांश से 97°25' उत्तरी आक्षांश तथा 8°4' पूर्वी देशान्तर से 37°6' पूर्वी देशान्तर तक

उत्तरः- (B)

2. कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से होकर गुजरती है?

(A) 5

(B) 6

(C) 7

(D) 8

उत्तर :- (D)

3. भारत के किस राज्य की सीमा नेपाल के साथ सीमा नहीं बनाती है?

(A) पश्चिम बंगाल

(B) सिक्किम

(C) बिहार

(D) हिमाचल प्रदेश

उत्तर :- (D)

4. प्राचीन भारतीय भौगोलिक मान्यता के अनुसार भारतवर्ष किस द्वीप का अंग था ?

(A) पुष्कर द्वीप

(B) जम्बू द्वीप

(C) कांच द्वीप

(D) कुश द्वीप

उत्तर :- (B)

5. भारतीय भूभाग का कुल क्षेत्रफल लगभग है-

(A) 32,87,263 वर्ग किमी.

(B) 1269219.34 वर्ग मील

(C) 32,87,263 वर्ग एकड़

(D) A व B दोनों

उत्तर :- (D)

6. भारत और श्रीलंका को अलग करने वाली जलसंधि है-

(A) कुक जलसंधि

(B) मलक्का जलसंधि

(C) पाक जलसंधि

(D) सुंडा जलसंधि

उत्तर :- (C)

7. किस भारतीय राज्य की सीमा सर्वाधिक राज्यों की सीमा को स्पर्श करती है?

(A) मध्य प्रदेश

(B) असम

(C) उत्तर प्रदेश

(D) आन्ध्र प्रदेश

उत्तर :- (C)

8. निम्नलिखित प्रमुख भारतीय नगरों में से कौन-सा एक सबसे अधिक पूर्व की ओर अवस्थित है?

(A) हैदराबाद

(B) भोपाल

(C) लखनऊ

(D) बंगलुरू

उत्तर :- (C)

9. भारत के किस प्रदेश की सीमाएं तीन देशों क्रमशः नेपाल, भूटान एवं चीन से मिलती हैं?

(A) अरुणाचल प्रदेश

(B) मेघालय

(C) पश्चिम बंगाल

(D) सिक्किम

उत्तर :- (D)

10. भारत के कितने राज्यों से समुद्र तटरेखा संलग्न हैं?

(A) 7

(B) 8

(C) 9

(D) 10

उत्तरः- (C)

11. निम्न नगरों में से कौन-सा कर्क रेखा के निकटतम हैं ?

(A) कोलकाता

(B) दिल्ली

(C) जोधपुर

(D) नागपुर

उत्तर :- (A)

12. निम्नलिखित में से किस द्वीप युग्म को 10डिग्री चैनल अलग करता हैं ?

(A) दक्षिणी अंडमान तथा लिटिल अंडमान

(B) लक्षद्वीप एवं मिनिकाय

(C) छोटा अंडमान तथा कार निकोबार

(D) पंबन तथा मन्नार

उत्तर :- (C)

13. भारतीय मानक समय (IST) निम्नलिखित स्थानों में से किसके समीप से लिया जाता हैं -

(A) लखनऊ

(B) इलाहाबाद (नैनी)

(C) मेरठ

(D) मुजफ्फरनगर

उत्तर :- (B)

14. यदि अरूणाचल प्रदेश में सूर्योदय 5.00 बजे प्रातः (IST) पर होता हैं, तो गुजरात में काण्डला में सूर्योदय किस समय (IST) पर होगा ?

(A) लगभग 6.00 प्रातः

(B) लगभग 5.30 प्रातः

(C) लगभग 7.00 प्रातः

(D) लगभग 7.30 प्रातः

उत्तर :- (C)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियाँ तथा अरुणाचल प्रदेश में डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियो के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)

- शिवालिक हिमालय में चलने वाली मानसूनी धाराएँ चोस कहलाती है।

करेवा

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के समय कश्मीर घाटी में कुछ अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों के द्वारा लेकर आए अवसाद के कारण ये झीलें अवसाद से भर गई।
- ऐसे उपजाऊ क्षेत्रों में जाफरन / केसर की खेती की जाती है जिन्हें करेवा कहा जाता है।

ऋतु प्रवास

- जम्मू और कश्मीर में रहने वाली जनजातियों गुज्जर, बकरवाल, झुकिया, भूटिया इत्यादि मध्य हिमालय में बर्फ के पिछलने के उपरान्त निर्मित होने वाले घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराने के लिए प्रवास करते हैं तथा ये पुनः सर्दियों के दिनों में मैदानी भागों में आ जाते हैं जिसे ऋतु प्रवास कहा जाता है।

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय का ही विस्तार हैं

नामचा बरवा के निकट हिमालय अक्षसंधीय मोड़ के कारण दक्षिण की ओर मुड़ जाता है। पटकाईबुम, नागा, मणिपुर, लुशाई, या मिजो पहाड़ी आदि हिमालय का विस्तार बन जाता है यह पहाड़ियाँ भारत एवं म्यांमार सीमा पर स्थित हैं।

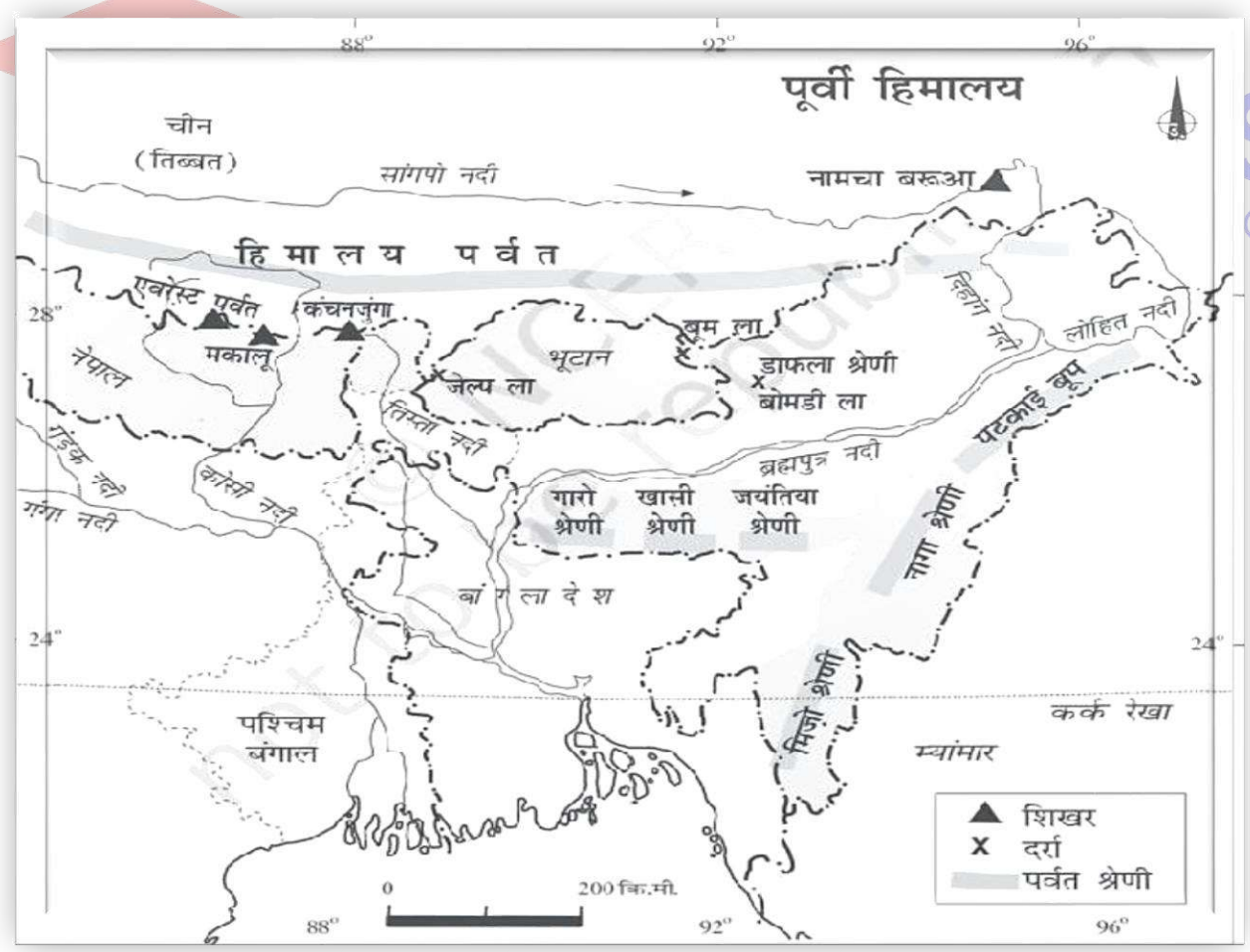

- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ काफी कटी - फटी हैं।
- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ भारतीय मानसून को दिशा प्रदान करती हैं।

- इस तरह यह पहाड़ियाँ जल विभाजक के साथ -
साथ जलवायु विभाजक हैं।

अरुणाचल प्रदेश	डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी (शिवालिक हिमालय) पटकाई बूम (महान हिमालय)
नागालैण्ड	नागा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी माउंट सरमाटी (3826 मीटर) हैं। इस पर नागालैण्ड की राजधानी कोहिमा (भारत के किसी राज्य की सबसे पूर्वोतर राजधानी) स्थित हैं।
मणिपुर	मणिपुर की पहाड़ी या लैमाटोल पहाड़ी इस पर लोकटक झील स्थित हैं। इस झील में भारत का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान कैबुल लामजाओ स्थित हैं।
मिजोरम	मिजो पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी ब्लू माउंटेन हैं।
मेघालय	गारों, खांसी व जयंतिया पहाड़ियाँ (प्रायद्वीपीय पठारी भाग का हिस्सा) गारो खासी एवं जयंतिया पहाड़ी शिलांग के पठार पर अवस्थित हैं।
असम	मिकिर, रेंगमा व बरेल पहाडिया NOTE- बरेल पहाड़ी प्रायद्वीपीय भारत को महान हिमालय से अलग करती हैं।

हिमालय का प्रादेशिक विभाजन

सिडनी बुर्राड ने हिमालय का प्रादेशिक विभाजन (नदियों के आधार पर) किया तथा हिमालय को ५ प्रादेशिक भागों में बाँटा ।

क्र. सं.	हिमालय	लम्बाई (किमी.)	नदियाँ	विस्तार
1.	पंजाब हिमालय	560	सिन्धु - सतलुज	जम्मू-कश्मीर, लद्दाख व हिमाचल प्रदेश
2.	कुमायूँ हिमालय	320	सतलुज-काली	उत्तराखंड
3.	नेपाल हिमालय	800	काली- तिस्ता	नेपाल, सिक्किम व प. बंगाल
4.	असम हिमालय	750	तिस्ता-ब्रह्मपुत्र	सिक्किम, प. बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, भूटान व चीन

हिमालय के प्रमुख दर्रे

I.पश्चिमी हिमालय के दर्रे : -

काराकोरम: -

यह काराकोरम श्रेणी मे अवस्थित है, जो उत्तर में स्थित है इसकी ऊँचाई 5000 मी. है और भारत के लद्दाख को चीन के शिंजियांग प्रान्त से मिलाता है ।

जम्मू - कश्मीर के दर्रे-

बनिहाल दर्रा-

यह जम्मू से श्रीनगर जाने का नवीन मार्ग प्रदान करता है । इस दर्रे में भारत की सबसे लम्बी सुरंग चेनारी नासिरी सुरंग (9.2 किमी. वर्तमान में नया नाम श्यामा प्रसाद मुखर्जी) व जवाहर सुरंग (2531मी.) स्थित है ।

पीरपंजाल दर्रा-

जम्मू से श्रीनगर

जोजिला दर्रा-

श्रीनगर से कारगिल

लद्दाख के दर्रे-

फातुला दर्रा-

कारगिल से लेह

खारदुन्गला दर्रा-

लेह से नुब्रा घाटी यह विश्व का सबसे ऊंचा मोटर वाहन चलाने योग्य दर्रा था (18380 फीट) लेकिन वर्तमान में विश्व का सबसे ऊँचा मोटरसाहन चलाने योग्य दर्रा उमलिंगा दर्रा (19300 फीट) है

चांगला : - यह लद्दाख को तिब्बत से मिलाता है, यह शीत ऋतु में हिमपाद के लिए बंद रहता है ।

लानक ला : - लद्दाख के चीन अधिकृत अक्साई चीन में स्थित है और तिब्बत की राजधानी तथा लद्दाख के बीच सम्पर्क बनाता है ।

हिमाचल प्रदेश के दर्रे-

बरालाचा ला :- यह मंडी और लेह को आपस में जोड़ता हैं इसी से मनाली - लेह सड़क गुज़रता हैं। यह शीत ऋतु बंद रहता हैं

रोहतांग :- यह हिमाचल के लौह और स्पीति के बीच में संपर्क बनाता हैं इसी से मनाली - लेह सड़क गुज़रता हैं । इस पर अटल सुरंग (9.02) स्थित हैं ।

शिपकी ला : - हिमाचल प्रदेश को चीन से मिलाता हैं

देबचा दर्रा- मनाली से शिमला

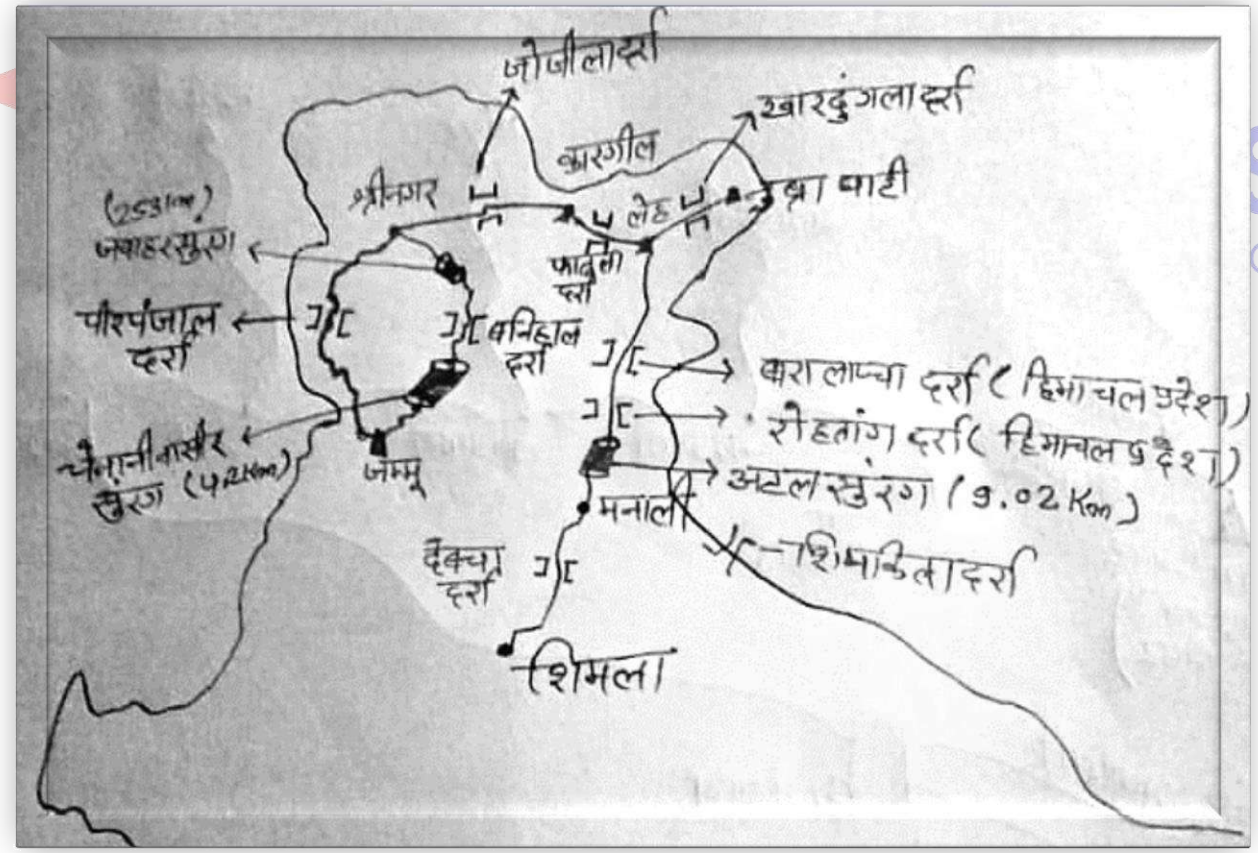

उत्तराखंड के दर्रे

लिपुलेख : - यह उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है । यह उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में अवस्थित हैं। इस पर उत्तराखंड, चीन, और नेपाल के ट्राई - जंक्शन स्थित हैं । इसी से कैलाश मानसरोवर की यात्रा सम्पन्न होता हैं ।

माना : - यह भी उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता हैं जो बद्रीनाथ मंदिर से कुछ ही दूर स्थित हैं।

नीति :- यह भी उत्तराखंड और तिब्बत के जोड़ता है जो नवम्बर से लेकर मई तक बंद रहता है ।

2. **<u>पूर्वी हिमालय के दर्रे : -</u>**

सिक्किम के दर्रे

नाथू ला : - यह सिक्किम (भारत) – चीन सीमा पर स्थित है जो लगभग 4310 मी. की ऊँचाई पर है। यह प्राचीन सिल्क मार्ग का अंग था और यहाँ से भारत एवं चीन के बीच व्यापारिक संबंध थे । भारत – चीन युद्ध (वर्ष 1962) के बाद इसे बंद कर दिया गया था लेकिन वर्ष 2006 को पुनः खोल दिया गया है ।

जेलेप ला : -यह सिक्किम – भूटान सीमा पर स्थित है और चुम्बी घाटी द्वारा सिक्किम को ल्हासा (तिब्बत) से जोड़ता है ।

अरुणाचल प्रदेश के दर्रे

बोम-डि-ला बुमला यांग्याप दर्रे: - यह तीनों दर्रे अरुणाचल प्रदेश को तिब्बत के पठार से जोड़ते है ।

पान्गसांड : - यह भी अरुणाचल प्रदेश को म्यांमार से जोड़ता है ।

प्रश्न :- निम्नलिखित में से कौन सा सुमेलित नहीं है ? (RAS PRE. 2016)

दर्रे	राज्य में स्थिति
(1) शिपकी ला -	जम्मू व कश्मीर
(2) जेलेप ला -	सिक्किम
(3) बॉम डिला -	अरुणाचल प्रदेश
(4) माना और नीति -	उत्तराखण्ड

उत्तर :- (1)

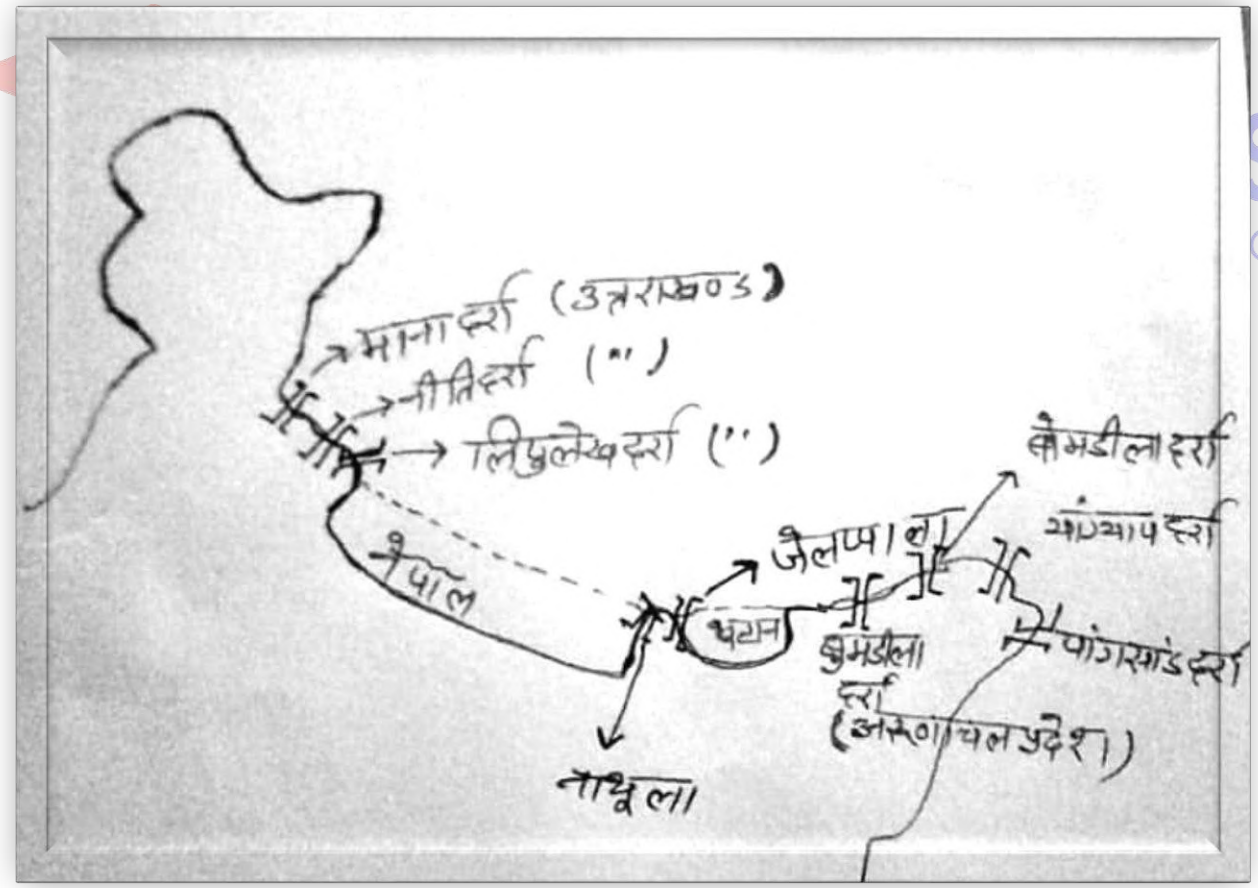

इंडो तिब्बत थ्रस्ट (IT THARST)	ट्रांस हिमालय को महान हिमालय से अलग
मुख्य केन्द्रीय दरार (MCT)	महान हिमालय को मध्य हिमालय से अलग

अभ्यास प्रश्न

Q.1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. भारत में, हिमालय केवल 5 राज्यों में फैला हुआ हैं ।

2. पश्चिमी घाट केवल पांच राज्यों में फैले हुए हैं।

3. पुलिकट झील केवल दो राज्यों में फैली हुई हैं ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं ?

(A) केवल 3 (B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2 और 3 (D) केवल 1 और 3

उत्तर :- **(A)**

Q.2. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन 'सर क्रीक' के विषय में सही हैं ?

(A) यह भारत और पाकिस्तान के बीच झेलम नदी को विभाजित करने वाली एक काल्पनिक रेखा हैं ।

(B) यह गुजरात और पाकिस्तान के सिंध प्रान्त के बीच सीमा बनाता हैं ।

(C) यह भारत और म्यांमार के बीच सीमा बनाने वाली एक संकरी धारा हैं

(D) यह बंगाल की खाड़ी में एक अति लघु द्वीप और एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं

उत्तर :- **(B)**

Q.3. यदि हिमालय – पर्वत – श्रेणियाँ नहीं होती तो भारत पर सर्वाधिक संभाव्य भौगोलिक प्रभाव क्या होता

1. देश के अधिकांश भाग में साइबेरिया से आने वाली शीत लहरों का अनुभव होता ।

2. सिंध-गंगा मैदान इतनी सुविस्तृत जलोढ़ मृदा से वंचित होता ।

3. मानसून का प्रतिरूप वर्तमान प्रतिरूप से भिन्न होता ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही हैं/हैं ?

(A) केवल 1 और 3 (B) केवल 1

(C) केवल 2 और 3 (D) 1,2 और 3

उत्तर **(D)**

Q.4. निम्नलिखित समूहों में कौन सा पूर्व से पश्चिम की ओर पर्वत शिखरों का सही कम हैं ?

(A) कंचनजंगा, एवरेस्ट, अन्नपूर्णा, धौलागिरि

(B) एवरेस्ट, कंचनजंगा, अन्नापूर्णा, धौलागिरि

(C) कंजनजंगा, धौलागिरि, अन्नपूर्णा, एवरेस्ट

(D) एवरेस्ट, कंचनजंघा, धौलागिरि, अन्नपूर्णा

उत्तर :-**(A)**

Q.5. लघु हिमालय स्थित हैं मध्य में –

(A) शिवालिक और महान हिमालय

(B) ट्रांस हिमालय और महान हिमालय

(C) ट्रांस हिमालय और शिवालिक

(D) शिवालिक और बाह्य हिमालय

उत्तर - **(A)**

Q.6. निम्नलिखित में से उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर के सही क्रम वाली पर्वत श्रेणी कौन-सी हैं ?

(A) पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

(B) जास्कर पर्वत श्रेणी, पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

(C) कारकोरम पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, पीरपंजाल पर्वत श्रेणी

(D) पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

उत्तर **(C)**

Q.7. निम्नलिखित पर विचार कीजिए -

1. अरावली की पहाड़ियाँ 2. सह्याद्रि पर्वत श्रेणी

3. सतपुड़ा पर्वत श्रेणी

5.ऊर्जा गंगा परियोजना

- 24 अक्टूबर 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी में केंद्र सरकार की अति महत्त्वाकांक्षी गैस पाइपलाइन परियोजना ऊर्जा गंगा का शिलान्यास किया।
- ऊर्जा गंगा परियोजना पूर्वी भारत के सात शहरों वाराणसी, राँची, कटक, पटना, कोलकाता, जमशेदपुर, भुवनेश्वर के लिए शहरी गैस वितरण परियोजना है।
- इस परियोजना में 2540 किमी. पाइपलाइन बिछाने का लक्ष्य रखा गया है
- राज्य द्वारा संचालित गैस यूटिलिटी – गैस ऑथोरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड इस परियोजना को क्रियान्वित कर रहा है।

अध्याय – 9

प्रमुख उद्योग एवं औद्योगिक प्रदेश

- भारत प्राचीन काल से ही कुटीर उद्योग, शिल्पों तथा वाणिज्य के लिए प्रसिद्ध था । भारतीय मलमल, सूती एवं रेशमी वस्त्र, कलात्मक वस्तुओं की विश्व में बहुत माँग थी ।
- किन्तु इंग्लैण्ड़ में हुई औद्योगिक क्रांति ने भारत के परम्परागत हस्त शिल्प उद्योग को बुरी तरह से प्रभावित किया ।
- स्वतंत्रता के बाद देश की पहली औद्योगिक नीति की घोषणा 6 अप्रैल 1948 को तत्कालीन केन्द्रीय उद्योग मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के द्वारा की गई । इसके साथ ही भारत में मिश्रित एवं नियंत्रित अर्थव्यवस्था की नींव रखी गई ।

स्वतंत्रता से पूर्व भारत में स्थापित उद्योग-

- लौह इस्पात उद्योग:- 1874 में कुल्टी (प. बंगाल) में पहला व्यवस्थित लौह इस्पात केन्द्र स्थापित किया गया ।
- एल्युमीनियम उद्योग:- 1837 में जे.के. नगर (प. बंगाल) में पहला एल्युमीनियम उद्योग स्थापित किया गया।
- सीमेंट उद्योग:- भारत में प्रथम सीमेंट कारखाना वर्ष 1904 में गुजरात के पोरबंदर में स्थापित किया गया, परंतु सीमेंट का उत्पादन वर्ष 1904 में चेन्नई में स्थापित कारखाने में प्रारंभ हुआ ।
- रसायनिक उद्योग:- भारत में रसायनिक उद्योग की शुरुआत 1906 में रानीपेट (तमिलनाडु) में सुपर फॉस्फेट के यंत्र के साथ हुई ।
- जहाजरानी उद्योग :- 1941 में विशाखापट्टनम में पहला जहाजरानी उद्योग लगाया गया जिसका नाम हिन्दुस्तान शिपयार्ड था ।
- सुती वस्त्र उद्योग :- 1818 में कोलकता में प्रथम सुती वस्त्र मील की स्थापना की गई जो असफल रही। 1854 में मुंबई में प्रथम सफल सुती वस्त्र मील की स्थापना डाबर द्वारा किया गया ।
- जूट उद्योग:- जूट उद्योग की स्थापना 1854 में रिशरा (कोलकाता) में की गई ।
- ऊनी वस्त्र उद्योग:- भारत में पहली ऊनी वस्त्र मील की स्थापना 1876 में कानपुर में की गई ।

- कागज उद्योग:- भारत में पहली कागज मील की स्थापना प.बंगाल के सिरामपुर में की गई जो असफल रही इसके बाद 1879 में लखनऊ व 1881 में प. बंगाल के टीटागढ़ में की गई जो सफल रही ।

नई औद्योगिक नीति, 1991

- 24 जुलाई, 1991 में घोषित इस नीति के तहत् औद्योगिक क्षेत्र में उदारीकरण, नीजीकरण व भूमंडलीकरण का नारा दिया गया ।
- इस नीति के तहत औद्योगिक व वित्तीय पुनर्निमाण बोर्ड (BLFR) का गठन किया गया ।
- सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका में कटौती करते हुए शेयरों को खुले बाजार में जारी किया गया ।
- नई विनिर्माण नीति, 2011
- 4 नवंबर 2011 को नई विनिर्माण नीति की घोषणा की गई । इसका उद्देश्य GDP में विनिर्माण की हिस्सेदारी को 25 प्रतिशत तक करना तथा रोजगार के क्षेत्र में 10 करोड़ से भी अधिक रोजगारों का सृजित करना था ।

वर्ष 1951-52 में GDP में औद्योगिक क्षेत्र का भाग 16.6 प्रतिशत था तथा वर्तमान में यह लगभग 31 प्रतिशत है ।

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)

- यह एक संकेतक है जो एक निश्चित अवधि के दौरान औद्योगिक उत्पादों के उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन की माप करता है।
- इसका आधार वर्ष 2011-2012 है।
- इसे सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (National Statistical Office- NSO) द्वारा मासिक रूप से संकलित और प्रकाशित किया जाता है।
- यह एक समग्र संकेतक है जो निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत उद्योग समूहों की विकास दर की माप करता है:

✓ **व्यापक क्षेत्र (Broad sectors):** खनन, विनिर्माण और बिजली।

✓ **उपयोग-आधारित क्षेत्र (Use-Based Sectors):** बुनियादी वस्तुएँ, पूंजीगत वस्तुएँ और मध्यवर्ती वस्तुएँ।

आठ प्रमुख उद्योगों का सूचकांक (Index of Eight Core Industries- ICI):

- यह भारतीय अर्थव्यवस्था के आठ सबसे मौलिक औद्योगिक क्षेत्रों का सूचकांक है और IIP में 40.27% भारांक (weightage) रखता है।
- मासिक ICI आठ प्रमुख उद्योगों में उत्पादन के सामूहिक और व्यक्तिगत प्रदर्शन की माप करता है।
- कोर सेक्टर के आठ प्रमुख उद्योग अपने भारांक के घटते क्रम में इस प्रकार हैं:- रिफाइनरी उत्पाद> बिजली> इस्पात> कोयला> कच्चा तेल> प्राकृतिक गैस> सीमेंट> उर्वरक।

भारत के प्रमुख उद्योग

लौह इस्पात उद्योग:-

- भारत में लोहा - इस्पात उद्योग का आरम्भ 1870 में हुआ था , जब बंगाल आयरन वर्क्स कम्पनी ने झरिया के निकट कुलटी (पश्चिमी बंगाल) में अपने संयंत्र की स्थापना की ।
- यह कारखाना केवल ढलवाँ लोहे का ही उत्पादन कर पाया ।
- भारत में लोह - इस्पात उद्योग की आधुनिक परम्परा वास्तव में जमशेदजी टाटा द्वारा रखी गई । इन्होंने 1907 में साँकची (वर्तमान जमशेदपुर) नामक स्थान पर एक आधुनिक कारखाना ' टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (TISCO) की स्थापना के साथ हुआ ।
- इसके बाद 1919 में बर्नपुर में इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (IISCO) की स्थापना हुई । ये दोनों ही इकाइयाँ निजी क्षेत्र में स्थापित की गई ।
- सन् 1923 तके भद्रावती में विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील वर्क्स की स्थापना (MISCO) के साथ सार्वजनिक क्षेत्र की पहली इकाई ने कार्य प्रारम्भ किया ।
- 1936 में कुल्टी व हीरापुर के दोनों कारखानें ' इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी ' में मिला दिए गये ।
- 1953 में बर्नपुर को भी इनमें शामिल कर दिया गया और इसकी तीन इकाइयाँ (कुल्टी , हीरापुर , बर्नपुर) हो गई । चौथी पंचवर्षीय योजना में इन कारखानों की वर्तमान क्षमता का अधिक उपयोग होने लगा तथा सेलम (तमिलनाडु) , विजयनगर

(कर्नाटक) , विशाखापट्टनम (आंध्र प्रदेश) में नए इस्पात कारखाने स्थापित हुए ।

- सन् 1978 में बोकारो इस्पात संयंत्र के प्रथम चरण के पूरा हो जाने पर इस्पात उत्पादन क्षमता में वृद्धि संभव हो पाई ।
- 1974 में सरकार ने स्टील ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया (SAIL) की स्थापना की तथा कम्पनी को इस्पात उद्योग में विकास की जिम्मेदारी दी गई । इसके अन्तर्गत भिलाई , दुर्गापुर , राउरकेला , बोकारो व बर्नपुर इकाइयों को सम्मिलित कर एकीकृत इस्पात संयंत्रों के प्रबन्धन के लिए उत्तरदायी बनाया गया ।
- 14 जुलाई 1976 को IISCO (इस्को) का स्वामित्व भी सरकार ने अपने हाथ में लेकर (SAIL) में विलय कर दिया गया । सन्दर्भित विलय 1 अप्रेल, 2005 से प्रभावी माना गया और SAIL के अधिन एकीकृत संयंत्रों की संख्या 5 हो गई है ।
- लोहा- इस्पात उद्योग में प्रयुक्त होने वाला कच्चा माल कोयला , लोह अयस्क , चूने का पत्थर , मैंगनीज आदि भारी एवं कम मूल्य का होता है । अतः इसे दूर तक ले जाना आर्थिक दृष्टि से ठीक नहीं है । इसलिए अधिकाँश लोह इस्पात उद्योग कच्चे माल के प्राप्ति स्थान पर ही लगाए जाते हैं ।
- यही कारण है कि विश्व के लोह इस्पात कारखाने कोयले एवं लोहे की खानों के समीप ही स्थापित किए जाते हैं । इसके अतिरिक्त उद्योग में जल , सस्ता परिवहन , पूँजी , कुशल श्रमिक , बाजार की समीपता आवश्यक है ।
- भारत वर्ष में उद्योग की स्थापना 4 भिन्न स्थितियों वाले क्षेत्रों में हुई है ।

(1) कोयला क्षेत्रों के निकट बर्नपुर , हीरापुर , कुल्टी , दुर्गापुर , बोकारो ।

(2) लौह - अयस्क क्षेत्रों के निकट भिलाई , राउरकेला , भद्रावती , सेलम , विजयनगर (कर्नाटक) ।

(3) कोयला एवं लौह अयस्क के मध्य टाटा इस्पात कारखाना ।

(4) तटीय क्षेत्र एवं व्यापार की सुविधा विशाखापट्टनम (आन्ध्र प्रदेश)

दूसरी पंचवर्षीय योजना में लगाए गए कारखाने -

- राउरकेला (ओड़िशा):- जर्मनी के सहयोग से स्थापित (1955 में स्थापना, 1959 से उत्पादन शुरू)
- भिलाई (छत्तीसगढ़):- रूस के सहयोग से स्थापित (1955 में स्थापना, 1959 से उत्पादन शुरू)
- दुर्गापुर (प. बंगाल):- ब्रिटेन के सहयोग से स्थापित (1959 में स्थापना, 1962 से उत्पादन शुरू)

नोटः- तीसरी पंचवर्षीय योजना में रूस की सहायता से 1966 में बोकारो (झारखण्ड़) में लौह इस्पात कारखाने की स्थापना की गई ।

1974 में सरकार ने स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAIL) की स्थापना की तथा इसे इस्पात उद्योग के विकास की जिम्मेदारी दी गई । 'सेल' के अधीन एकीकृत इस्पात संयत्रों की संख्या अब आठ (भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला, बोकारो, इस्को, विश्वेश्वरैया, विशाखापट्टनम एवं सलेम) हो गई है ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

A. टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (TISCO)

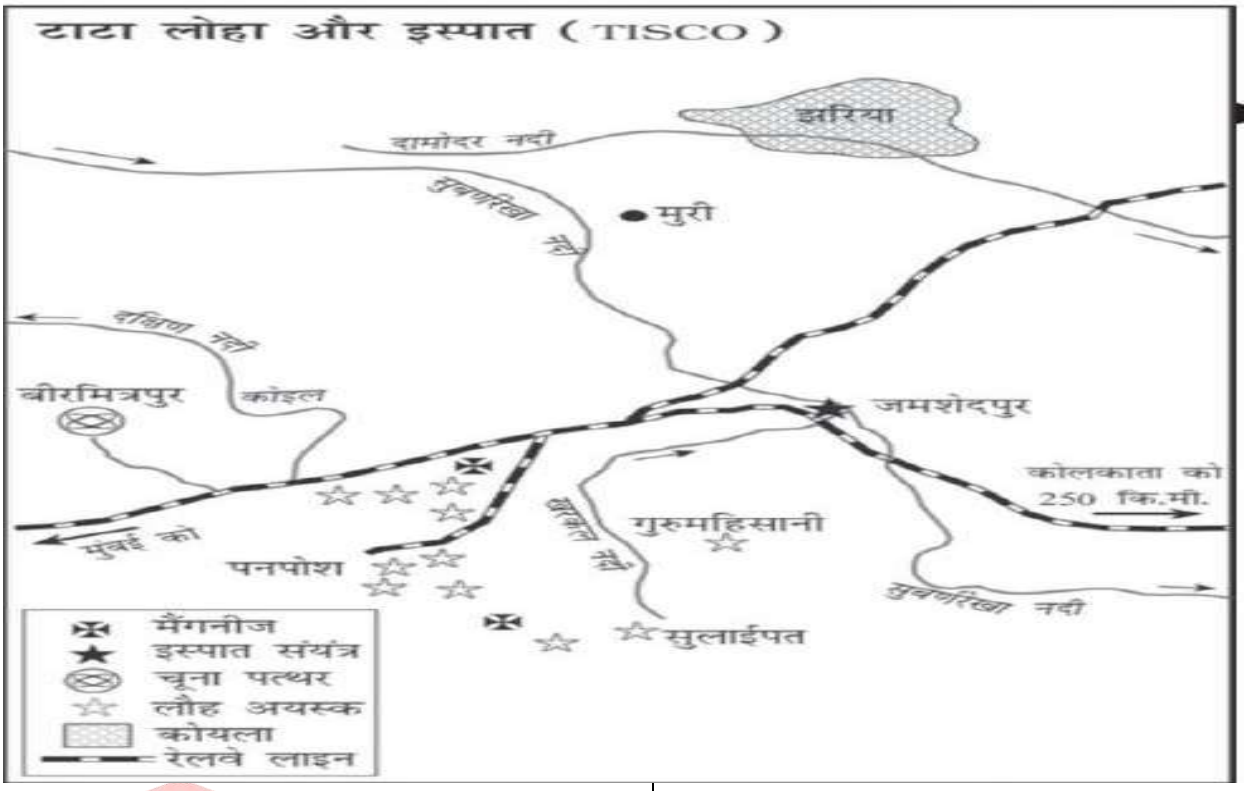

- टाटा लोह इस्पात कम्पनी भारत का पहला बड़ा कारखाना जहाँ भारत का 20 % इस्पात तैयार होता है ।
- इस कारखाने में इस्पात के अतिरिक्त लोहे के गर्डर , रेल का सामान , कांटेदार तार आदि भी बनाए जाते हैं ।
- टाटा लौह इस्पात मुम्बई , कोलकाता रेलवे मार्ग के बहुत निकट स्थित है । संयंत्र के पर्याप्त जल सुवर्ण रेखा , खारकोई नदियों , लोहा नोआमण्डी और बादाम पहाड़ से मिल जाता है। कोयला झरिया व रानीगंज , बोकारो से प्राप्त होता है ।
- 240 किमी दूर कोलकाता बन्दरगाह है , जहाँ से मशीनों का आयात एवं इस्पात के निर्यात की उत्तम सुविधा प्राप्त है ।

B. भारतीय लोहा और इस्पात का कारखाना (IISCO)

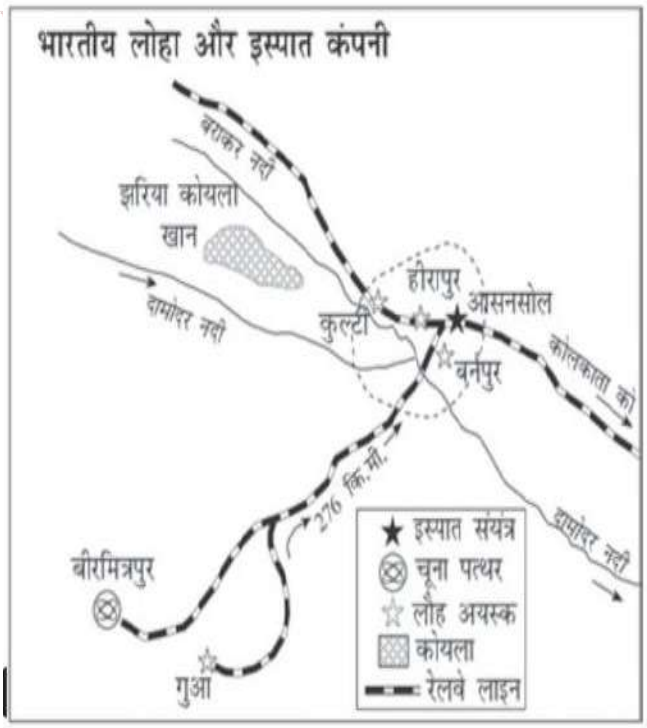

- सन् 1874 में स्थापित किया गया बर्नपुर में फिर से 2 इकाइयों को शामिल किया और कम्पनी में 3 इकाइयाँ हो गई यह कुल्टी , बर्नपुर और हीरापुर ।
- ये तीनों ही कारखानें रेल मार्ग से जुड़े हुए है । कुल्टी बाराकर नदी पर स्थित है तथा कोलकाता से 215 किमी . दूर है । हीरापुर आसनसोल से 6 किमी और कुल्टी 11 किमी दूर है ।
- हीरापुर में कच्चा लोहा (PMI) पीग आइरन बनता है , जिसको कुल्टी कारखाने में इस्पात के रूप में तैयार करता है । यहाँ से बर्नपुर भेजा जाता है , जहाँ रोलिंग मिल के द्वारा उपयोग योग्य चादरें , छड़े , पाइप , रेल्वे स्लीपर , एंगल , पत्ती तार मुख्य रूप से बनाए जाते हैं । ये तीनों इकाइयाँ संगठित रूप से काम करती हैं ।
- 1976 से इनका प्रबन्ध पूर्णतः सार्वजनिक क्षेत्र SAIL के पास आ गया ।
- इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी के तीनों संयंत्र दामोदर घाटी कोयला क्षेत्रों (रानीगंज , झारिया , रामगढ़) के निकट कोलकाता- आसनसोल रेलमार्ग पर स्थित है । लोह अयस्क सिंह भूमि (झारखण्ड) , जल दामोदर नदी की सहायक नदी बराकर से प्राप्त किया जाता है ।

C . विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड

- इस कम्पनी की स्थापना 1923 में कर्नाटक में भद्रावती नदी के किनारे भद्रावती स्थान पर की गई थी ।
- यह बाबाबूदन की पहाड़ियों , केमान गुंडी के लोह अयस्क क्षेत्र के निकट स्थित है । चूना माँडीगुडा तथा डोलामाइट शंकरगुडा से आता है । लकड़ी के कोयले के बाद अब शिवसमुद्रम से जल विद्युत प्राप्त की जाती है ।
- यहाँ विशिष्ट एवं अलौय किस्म का इस्पात बनाया जाता है ।
- अब यह SAIL के स्वामित्व में है ।

D. राउरकेला

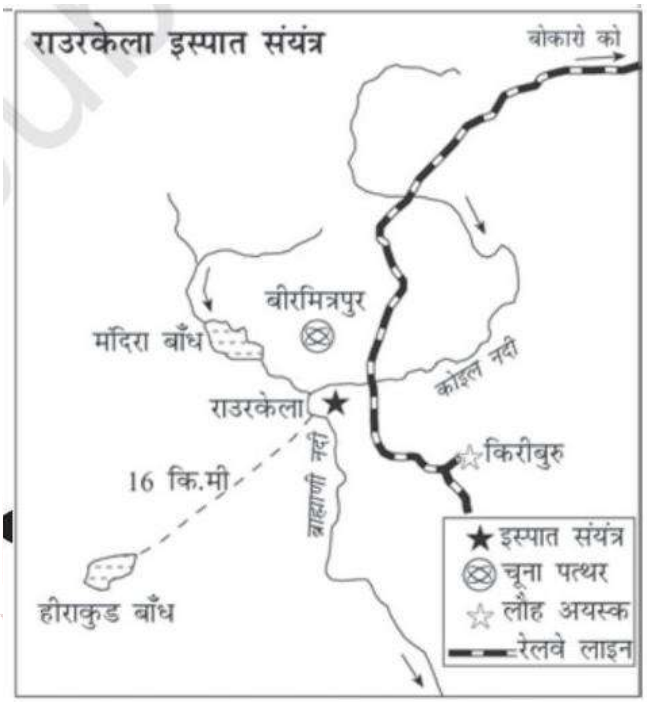

- हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड का यह कारखाना उड़ीसा के सुन्दरगढ़ जिले में साख और कोइल नदियों के संगम पर जर्मनी की क्रूप्स व डिमाग कम्पनियों की सहायता से की गई ।
- संयंत्र को कच्चे माल की निकटता के आधार पर स्थापित किया गया था जिससे परिवहन मूल्य कम हो जाता है ।
- लोह अयस्क उड़ीसा के क्योंझर एवं सुन्दरगढ़ जिले से तथा कोयला झरिया , झारखण्ड क्षेत्र , मैंगनीज क्योंझर से चूना पत्थर वीर मिश्रपुर से होती है । हीराकुण्ड से जल विद्युत फोयल व शंख नदियों से पर्याप्त जल प्राप्त होता है ।
- कोलकाता - मुम्बई रेल मार्ग से परिवहन सुविधा प्राप्त होती है ।
- राउरकेला में अधिकतम चपटे (Flat) आकार की वस्तुएँ अलग - अलग मोटाई की प्लेट,

C. व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तथा राष्ट्र की एकता एवं अखंडता
D. सरकारी सेवकों की सेवा की सुरक्षा

उत्तर – C

5. डॉ. बी. आर अम्बेडकर द्वारा संविधान सभा में दिए अपने अंतिम भाषण में निम्न में से किस शब्द को शामिल नहीं किया गया था?

A. स्वतंत्रता B. नम्यता
C. समता D. भाईचारा

उत्तर - B

6. किस संविधान संशोधन से प्रस्तावना में 'समाजवादी' एवं 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द जोड़े गए?

A. 15 वाँ संशोधन B. 39 वाँ संशोधन
C. 42वाँ संशोधन D. 44 वाँ संशोधन

उत्तर - C

7. संविधान की प्रस्तावना:

A. संविधान का एक भाग नहीं है।
B. प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों को इंगित करती है।
C. संसद द्वारा इसमें संशोधन नहीं किया जा सकता है।
D. संविधान की शक्ति का स्त्रोत है।

उत्तर –B

अध्याय – 3

मौलिक अधिकार

भारत के संविधान के **भाग तीन में अनु. 12 से 35 तक में मौलिक अधिकारों से सम्बन्धित** प्रावधान हैं।

मौलिक अधिकारों की अवधारणा को **U.S.A से** अपनाया गया है। भारत की व्यवस्था में मौलिक अधिकारों के निम्नलिखित महत्व हैं ।

(1) मौलिक अधिकारों के माध्यम से राजनीतिक एवं प्रशासनिक लोकतंत्र की स्थापना होती है। अर्थात् कोई भी नागरिक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में राजनीति में भागीदारी कर सकता है और प्रत्येक नागरिक अपनी योग्यता के आधार पर प्रशासन का हिस्सा बन सकता है।
(2) मौलिक अधिकारों के माध्यम से सरकार की तानाशाही अथवा व्यक्ति विशेष की इच्छा पर नियंत्रण स्थापित होता है।
(3) मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सुरक्षा स्थापित होती हैं ।
(4) मौलिक अधिकारों के माध्यम से विधी के शासन की स्थापना होती है।
(5) मौलिक अधिकारों के माध्यम से अल्पसंख्यक और दुर्बल वर्ग को सुरक्षा प्राप्त होती है।
(6) मौलिक अधिकारों के माध्यम से पंथनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा को सुरक्षा प्राप्त होती हैं और इसको बढ़ावा मिलता है।
(7) मौलिक अधिकार सामाजिक समानता एवं सामाजिक न्याय यात्रा की स्थापना करते हैं।
(8) मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की गरिमा एवं सम्मान की रक्षा होती है।
(9) मौलिक अधिकार सार्वजनिक हित एवं राष्ट्र की एकता को बढ़ावा देते हैं।

मौलिक अधिकारों की विशेषताएँ

(1) **मौलिक अधिकार न्यायालय में वाद योग्य हैं । अर्थात् मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने पर सुरक्षा के लिए न्यायालय में अपील की जा सकती है।**

(2) कुछ मौलिक अधिकार केवल नागरिकों से सम्बंधित हैं। जबकि कुछ मौलिक अधिकार व्यक्ति से संबंधित हैं।

(3) **मौलिक अधिकारों पर युक्तियुक्त प्रतिबन्ध लगाया गया हैं।**

(4) मौलिक अधिकार राज्य के विरुद्ध प्रदान किए गये हैं। इसलिए ये राज्य के लिए नकारात्मक जबकि व्यक्ति के लिए सकारात्मक हैं।

(5) ये राज्य के प्राधिकार की कम करते हैं और व्यक्ति के सम्मान को बढ़ावा देते हैं।

(6) संसद को भी यह अधिकार नही कि वह मौलिक अधिकार से सम्बंधित मूल ढ़ाचे में परिवर्तन कर सके । (नकारात्मक परिवर्तन)

(7) आपातकाल के समय अनु० 20 और 21 के तहत प्राप्त मौलिक अधिकारों को छोड़कर अन्य मौलिक अधिकार निलंबित किए जा सकते हैं।

(8) मौलिक अधिकार शत्रु देश के नागरिक तथा अन्य देशों को प्राप्त नहीं हैं।

प्रश्न. निम्नांकित कथनों पर विचार कीजिए?

A. मूलअधिकारों एवं राज्य नीति के निदेशक तत्वों को यथासंभव प्रभावी बनाने के लिए साम्य संरचना का सिद्धांत अपनाया गया हैं।

B. 1980 के मिनर्वा मिल्स केस में उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 14 एवं 19 में उल्लेखित मूल अधिकारों पर अनुच्छेद 31(ख) एवं (ग) में उल्लेखित राज्य नीति के निदेशक तत्वों की वरीयता से संस्थापित की हैं

कूट -

a. केवल A सही हैं।
b. केवल B सही हैं।
c. (A) एवं (B) दोनों सत्य हैं।
d. (A) एवं (B) दोनों गलत हैं।

उत्तर - c

मौलिक अधिकारों की आलोचना -

(1) इनका कोई स्पष्ट दर्शन नहीं हैं। अधिकांश मौलिक अधिकारों की व्याख्या उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय पर छोड़ दी गई हैं।

(2) इनमें स्पष्टता का अभाव हैं और ये सामान्य लोगों की समझ से बाहर हैं।

(3) मौलिक अधिकार आर्थिक व्यय की स्थापना नहीं करते।

(4) **आपातकाल के समय इनका निलबन हो जाता हैं।**

note- अनुच्छेद - 21 का निलंबन किसी भी परिस्थिति में नहीं हो सकता ।

(5) निवारक निरोध जैसे प्रावधान मौलिक अधिकारों को कमजोर करते हैं और राज्य को नागरिकों पर हावी कर देते हैं ।

(6) **संसद के अधिकार हैं कि अनुच्छेद - 368 का प्रयोग कर इनमे कमी कर सकती हैं।**

(7) मौलिक अधिकारों के सम्बन्ध में मिलने वाला न्याय अत्यधिक महंगा हैं तथा प्रकिया जटिल हैं।

मौलिक अधिकार

अनु. 12 राज्य -	अनु. 13
(i) संघ सरकार एवं संसद (ii) राज्य सरकार एवं विधानमंडल (iii) स्थानीय प्राधिकरण / प्राधिकारी (iv) सार्वजनिक अधिकारी अन्य वे निजी संस्थाए जो राज्य के लिए कार्य करती हो	कोई भी विधि जो मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करती हैं तो अतिक्रमण की सीमा तक शून्य हो जाएगी । **विधि** (i) स्थाई विधि - संसद एवं विधानमण्डल द्वारा निर्मित (ii) अस्थाई विधि - जब राष्ट्रपति व राज्यपाल अध्यादेश जारी करें । (iii) कार्यपालिका के द्वारा निर्मित नियम/विधि (iv) ऐसी विधि जो संविधान पूर्व की हो

प्रश्न. निम्न में से कौन सा मूल अधिकार भारतीय संविधान में नागरिकों को नहीं दिया गया है?

a. देश के किसी भाग में बसने का अधिकार

b. लिंग समानता का अधिकार

c. सूचना का अधिकार

d. शोषण के विरुद्ध अधिकार

उत्तर – c

(I) समता का अधिकार :- (अनु. 14-18)

(i) विधि के समक्ष एवं विधियों का समान संरक्षण-

संविधान के अनु० 14 में विधि के समक्ष समता एवं विधियों के समान संरक्षण का प्रावधान हैं। **विधी के समक्ष समता की अवधारणा ब्रिटेन से** प्रभावित हैं। विधी के समक्ष समता से आशय हैं, विधी सर्वोच्च होगी। और कोई भी विधिक व्यक्ति विधी से ऊपर नही होगा।

विधी के समक्ष समता की निम्नलिखित विशेषताए होती हैं –

(a) कोई भी व्यक्ति (गरीब, अमीर, प्राधिकारी अथवा सामान्य व्यक्ति, सरकारी संगठन गेर सरकारी संगठन) विधी से ऊपर नही होगा।

(b) किसी भी व्यक्ति के लिए अथवा व्यक्ति के पक्ष में विशेषाधिकार नहीं होंगे।

(c) न्यायालय सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करेंगा।

विधि के समक्ष समता के सिद्धांत के भारत के संबंध में निम्नलिखित अपवाद हैं।

(i) भारत का राष्ट्रपति अथवा राज्यों के राज्यपाल पर पद पर रहते हुए किसी भी प्रकार का आपराधिक मुकदमा नही चलाया जाएगा।

(ii) राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल को इन पदों पर रहते हुए लिए गए निर्णयों के सम्बन्ध में न्यायालय में प्रश्नगत नही किया जायेगा।

(iii) कोई व्यक्ति यदि संसद अथवा राज्य विधानमंडल की कार्यवाही को उसी रूप में प्रकाशित करता हैं तो उसे दोषी नही माना जायेगा।

(iv) संसद अथवा राज्य विधानमंडल के सदस्यों को सदन की कार्यवाही के आरम्भ होने के 40 दिन पूर्व तथा कार्यवाही के समाप्त होने के 40 दिन बाद तक किसी दीवानी मामले में न्यायलय में उपस्थित होने के लिए बाध्य नही किया जायेगा।

(v) विदेशी राजनयिक अथवा कूटनीतिज्ञ फौजदारी मामलों एवं दीवानी मामलों से मुक्त होंगे।

(vi) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे – UNO, ADB, WB, IMF आदि के अधिकारी एवं कर्मचारी दीवानी एवं फौजदारी मामलों से मुक्त होंगे।

विधियों के समान संरक्षण की अवधारणा U.S.A. की देंन हैं।

विधियों के सामान संरक्षण से आशय हैं। "समान के साथ सामान व्यवहार तथा असमान के साथ असमान व्यवहार"

इस अवधारणा को सकारात्मक माना जाता हैं, क्योंकि इसके माध्यम से किसी के साथ अन्याय नही होता। भारत में बाल सुधार कानून, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए विशेष कानून, महिलाओ के लिए विशेष कानून इसका उदाहरण हैं।

कुछ आधारो पर विभेद का प्रतिषेध

- अनु. 15 में यह प्रावधान हैं कि राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान को लेकर विभेद नही करेगा। यह व्यवस्था राज्य और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं।
- इसमें प्रावधान हैं कि राज्य के द्वारा दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयो, होटल, मनोरंजन के स्थान आदि पर उपर्युक्त आधारों पर भेदभाव नही किया जायेगा।
- इसके अलावा राज्य निधि से पोषित कुओ, तालाबो, स्नानघाट आदि का प्रयोग करने से किसी व्यक्ति को उपर्युक्त आधारों पर रोका नही जायेगा।
- इसमें यह भी प्रावधान हैं कि राज्य महिलाओ एवं बच्चो के लिए विशेष व्यवस्था कर सकता हैं।
- इसमें यह भी व्यवस्था हैं कि राज्य SC,ST तथा शैक्षणिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों के लिए शैक्षणिक संस्थाओ में आरक्षण कर सकता हैं।
- इसमें प्रावधान हैं कि राज्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए शैक्षणिक संस्थाओ में आरक्षण कर सकता हैं।

में लोक उपासना के समय उपासना स्थानों के आस-पास और किसी भी अवस्था में, जब किसी सड़क मार्ग, आम रास्ते, घाट या यात्री उतरने के स्थान पर भीड़ हो अथवा उसमें बाध होने की सम्भावना हो, बाधओं का निवारण करे।

1. जो कोई जुलूस या जमाव अन्तिम पूर्ववर्ती उपधरा के अधीन दिए गए किसी आदेश का पालन करने में उपेक्षा करता है या इंकार करता है, वह विरुद्ध जमाव समझा जाएगा।

2. कोई मजिस्ट्रेट या पुलिस जिला अधीक्षक या पुलिस सहायक जिला अधीक्षक अथवा थाने का भारसाधक पुलिस अधिकारी ऐसे किसी जुलूस को, जो अन्तिम पूर्वगामी धरा के अधीन अनुदत्त किसी अनुज्ञप्ति की शर्तों का अतिक्रमण करता है, रोक सकेगा और उसे या ऐसे किसी जमाव को, जो किन्हीं यथा पूर्वोक्त शर्तों का अतिक्रमण करता है, बिखर जाने का आदेश दे सकेगा।

अध्याय – 9

राष्ट्रपति

- *भारत में **'राष्ट्र प्रमुख'** के रूप में **राष्ट्रपति** के **पद की व्यवस्था** को अपनाया गया हैं। ब्रिटिश क्राउन और अमेरिकी राष्ट्रपति से भिन्न, संविधान निर्माताओं ने भारतीय व्यवस्था के अनुरूप इस पद के एक संतुलित स्वरूप को अपनाया। **गणतांत्रिक प्रणाली** होने के कारण संविधान में **'निर्वाचित राष्ट्रपति'** के प्रावधान को शामिल किया गया।*

कार्यपालिका प्रमुख

- *मंत्रिमंडलीय कार्यपालिका में सामान्यतः दो प्रमुख होते हैं: एक **'वास्तविक प्रमुख' एवं दूसरा 'नाममात्र या औपचारिक प्रमुख'। भारत में राष्ट्रपति नाममात्र प्रमुख हैं।** तथा राष्ट्रपति कार्यालय की प्रकृति काफी सीमा तक औपचारिक हैं।*
- *शासन व्यवस्था में औपचारिक प्रमुख की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है:*
- *राष्ट्र प्रमुख के रूप में: **राष्ट्रपति देश की एकता, अखंडता एवं एकजुटता का प्रतीक हैं**। अतः व्यवहारिक रूप से राजप्रमुख न होते हुए भी भारतीय राष्ट्रपति को राष्ट्रप्रमुख की भूमिका प्रदान की गयी हैं।*
- *दलगत राजनीति से मुक्त रखने हेतु राष्ट्रपति कार्यालय को दलगत राजनीति से ऊपर माना जा सकता हैं।*
- *प्रशासन की निरंतरता हेतु- मंत्रिपरिषद् का कार्यकाल अनिश्चित होता हैं और यह लोकसभा में बहुमत पर निर्भर करता हैं। ऐसे में प्रशासन में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए एक निश्चित कार्यकाल वाले कार्यालय का होना आवश्यक हैं।*
- *संघवादी स्वरूप को बनाए रखने हेतुः भारत के संदर्भ में एक अतिरिक्त कारण, संघवाद भी हैं। राज्य विधानसभाओं के सदस्य भी राष्ट्रपति के चुनाव में भाग लेते हैं। इसलिए, यह कहा जा सकता हैं कि राष्ट्रपति संघ के अतिरिक्त राज्यों का भी प्रतिनिधित्व करता हैं।*
- ***संविधान के भाग 5 के अनुच्छेद 52 से 78 तक में संघ की कार्यपालिका का वर्णन हैं।***

- ***अनुच्छेद 52 के अनुसार, भारत का एक राष्ट्रपति होगा ।*** *यहाँ "होगा" शब्द के लिए "shall" का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि भारत का राष्ट्रपति अपने पद पर सदैव विधमान होगा । यह पद न तो कभी रिक्त रखा जा सकता है और न ही इसे कभी समाप्त किया जा सकता है । राष्ट्रपति का चुनाव, इसके कार्यकाल की समाप्ति से पहले ही संपन्न करवाए जाने का प्रावधान किया गया है । अस्वस्थता के कारण अस्थायी अनुपस्थिति आदि के मामले में उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति का पद धारण करेगा जब तक कि राष्ट्रपति अपना पदभार पुनर्ग्रहण न करें।*

<u>स्थायी कार्यपालिका एवं अस्थायी कार्यपालिका</u>

अनुच्छेद 53 (1) के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होगी और वह इसका प्रयोग इस संविधान के अनुसार स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा करेगा ।

विवरण

- *राष्ट्रपति, अपनी इस कार्यपालिकीय शक्ति का प्रयोग मुख्यतः दो प्रकार के अधीनस्थ अधिकारियों के माध्यम से करता है:*
- *स्थायी कार्यपालिा या नौकरशाही*
- *अस्थायी या राजनीतिक कार्यपालिका*
- *स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही*
- *स्थायी कार्यपालिका के अंतर्गत अखिल भारतीय सेवाएँ (IAS, IPS, IFoS), प्रांतीय सेवाएँ] स्थानीय सरकार के कर्मचारी और लोक उपक्रमों के तकनीकी एवं प्रबंधकीय अधिकारी सम्मिलित होते हैं ।*
- *नौकरशाही अथवा स्थायी कार्यपालिका की आवश्यकता क्यों घ्*
- *संविधान निर्माता ब्रिटिश शासन के दौरान अपने अनुभव से गैर-राजनीतिक एवं व्यावसायिक रूप से दक्ष प्रशासनिक मशीनरी के महत्व को जानते थे ।*
- *नौकरशाही, वह माध्यम है जिसके द्वारा सरकार की लोकहितकारी नीतियाँ जनता तक पहुँचती हैं ।*
- *सरकार के स्थायी कर्मचारी के रूप में कार्य करने वाले ये प्रशिक्षित एवं प्रवीण अधिकारी, नीतियों को बनाने व उसे लागू करने में मंत्रियों का सहयोग करते हैं ।*
- *वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में नीति-निर्माण एक अत्यंत ही जटिल कार्य बन गया है जिसके लिए विशेषज्ञता एवं गहन ज्ञान की आवश्यकता है । इसके लिए दक्ष एवं स्थायी कार्यपालिका की आवश्यकता है ।*
- *राजनीतिक या अस्थायी कार्यपालिका का ध्यान सामान्यतः नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन में अल्पकालीन राजनीतिक लाभ पर केंद्रित होता है । जबकि, स्थायी कार्यपालिका दीर्घकालीन समाजिक - आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ही नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन में मंत्रियों को परामर्श देती है ।*
- *सरकारो के बदलने के बावजूद भी स्थायी कार्यपालिका, नीतियों में निरंतरता एवं लोकप्रशासन में एकरूपता बनाए रखने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती है ।*
- *स्थायी कार्यपालिका एवं राजनीतिक कार्यपालिका के मध्य संबंध*
- *संसदीय शासन प्रणाली में, राजनीतिक कार्यपालिका (मंत्रीपरिषद्, प्रधानमंत्री सहित) सरकार के प्रभारी होते हैं एवं स्थायी कार्यपालिका या प्रशासन इनके नियंत्रण एवं देखरेख में होता है ।*
- *यह मंत्री की जिम्मेदारी है कि वह प्रशासन पर राजनीतिक नियंत्रण रखे ।*
- *राजनीतिक कार्यपालिका, जहाँ सामूहिक रूप से लोकसभा या विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है, वहीं स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही अपने संबंधित विभागों के मंत्रियों के प्रति उत्तरदयी होती हैं ।*
- *नौकरशाही से यह अपेक्षा की जाती है कि यह राजनीतिक रूप से तटस्थ हो, अर्थात् नौकरशाही, नीतियों पर विचार करते समय किसी राजनीतिक दृष्टिकोण या विचारधार का समर्थन नहीं करेगी ।*
- *लोकतंत्र में सरकारों के बदलने पर नौकरशाही की जिम्मेदारी है कि वह नई सरकार को अपनी नीति बनाने एवं लागू करने में मदद करें ।*
- *हमारा संविधान राष्ट्रपति के पद का सृजन करता है किंतु शासन की प्रणाली राष्ट्रपतीय नहीं है । शासन की राष्ट्रपतीय और संसदीय प्रणाली को समझना एवं उनके भेद जानना आवश्यक है । राष्ट्रपति प्रणाली के मुख्य लक्षण इस प्रकार है:-*
- *राष्ट्रपति राज्य का अध्यक्ष होता है और साथ ही शासनाध्यक्ष भी । वह राज्य व्यवस्था मंे शीर्षस्थ*

होता हैं । वह वास्तव में कार्यपालक होता हैं, नाममात्र का नहीं । उसमें जो शक्तियाँ निहित हैं उनका वह व्यवहार में और वास्तव में उपयोग करता हैं ।

- सभी कार्यपालिका शक्तियाँ राष्ट्रपति में निहित होती हैं । राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त मंत्रिमंड़ल उसे केवल सलाह देता हैं यह आवश्यक नही हैं कि वह उनकी सलाह माने । वह उनकी सलाह लेकर अपने विवेक के अनुसार कार्य कर सकता हैं ।
- राष्ट्रपति जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होता हैं । राष्ट्रपति के पद की अवधि विधान-मंड़ल की इच्छा पर आश्रित नहीं हैं । विधान-मंड़ल न तो राष्ट्रपति का निर्वाचन करता हैं और न उसे उसके पद से हटा सकता हैं ।
- राष्ट्रपति और मंत्रिमंड़ल के सदस्य, विधान मंड़ल के सदस्य नहीं होते हैं । राष्ट्रपति विधान-मंड़ल की अवधि के अवसान के पूर्व उसका विघटन नहीं कर सकता । **विधान-मंड़ल राष्ट्रपति की पदावधि को महाभियोग द्वारा ही समाप्त कर सकता हैं अन्यथा नहीं** । इस प्रकार राष्ट्रपति और विधान-मंड़ल नियत अवधि के लिए निर्वाचित होते हैं और एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं । एक का दुसरे में हस्तक्षेप नहीं होता।

राष्ट्रपति पद के लिए अर्हताएँ

अनु. 58 के अनुसार राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित अर्हताओं को पूर्ण करना आवश्यक हैं:

- वह भरत का नागरिक हो ।
- वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हों ।
- वह लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने के योग्य हों।
- वह संघ सरकार अथवा किसी राज्य सरकार अथवा किसी स्थानीय प्राधिकरण अथवा किसी सार्वजनिक प्राधिकरण में लाभ के पद पर न हों ।

राष्ट्रपति की पदावधि (Term of Office)

- अनु. 56 के अनुसार, राष्ट्रपति की पदावधि, उसके पद धारण करने की तिथि से पांच वर्ष तक होती हैं । हालाँकि वह निम्नलिखित रीतियों से अपने कार्यकाल के दौरान ही पदमुक्त हो सकता हैं:
- भारत के उपराष्ट्रपति को लिखित में त्यागपत्र सौंपकर ।
- अनुच्छेद - 60 में राष्ट्रपति की शपथ का प्रावधान हैं।
- संविधान का अतिक्रमण करने पर अनुच्छेद 61 में वर्णित महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा उसे पदमुक्त किया जा सकता हैं । अनु. 61(1) के तहत, महाभियोग हेतु एकमात्र आधार **'संविधान का अतिक्रमण'** उल्लिखित हैं ।
- यदि राष्ट्रपति का पद उसकी मृत्यु, त्यागपत्र, निष्कासन अथवा किन्हीं अन्य कारणों से रिक्त हो तो उपराष्ट्रपति, नये राष्ट्रपति के निर्वाचित होने तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा । **यदि उपराष्ट्रपति, का पद रिक्त हों, तो भारत का मुख्य न्यायाधीश (और यदि यह भी पद रिक्त हो तो उच्चतम न्यायालय का वरिष्ठतम न्यायाधीश) कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा ।**
- **पद रिक्त होने की तिथि से छह महीने के भीतर नए राष्ट्रपति का चुनाव करवाया जाना आवश्यक हैं ।** वर्तमान या भूतपूर्व राष्ट्रपति, संविधान के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए इस पद के लिए पुनर्निर्वाचन का पात्र होगा ।

निर्वाचन प्रणाली

- भारत के **राष्ट्रपति के निर्वाचन (अनु. 55)** के लिए **आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत पद्धति को** अपनाया गया हैं । इस पद्धति के तहत निर्वाचन, **गुप्त मतदान के** माध्यम से एक निर्वाचक मंड़ल द्वारा किया जाता हैं ।
- भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप से **अप्रत्यक्ष चुनाव प्रक्रिया को अपनाया** गया हैं । (अमेरिकी राष्ट्रपति की निर्वाचन प्रक्रिया सैद्धांतिक रूप से अप्रत्यक्ष जबकि व्यावहारिक रूप से प्रत्यक्ष हैं ।)

प्रश्न. सुमेलित कीजिए -

सूची -1 भारत के राष्ट्रपति	सूची -2 चुनावी विवरण
(a) राजेन्द्र प्रसाद	(i) निर्विरोध निर्वाचित
(b) जाकिर हुसैन	(ii) द्वितीय वरीयता की मतगणना

(c) वी.वी गिरी (iii) दो कार्यकालों के लिए निर्वाचित

(d) नीलम संजीव रेड्डी (iv) पद धारण के दौरान मृत्यु

कूट :-	A	B	C	D
(a)	iii	iv	ii	i
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	iii	ii	i	iv

उत्तर - a

निर्वाचक मंड़ल (Electoral college)

निर्वाचक मंड़ल में सम्मिलित होते हैं:

- **संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य ।**
- **राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य**
- **दिल्ली और पुदुचेरी संघ शासित प्रदेशां की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य(70 वें** संविधान संशोधन अधिनियमए 1992 द्वारा शामिल ।
- इसका अर्थ है कि निम्नलिखित सदस्यों को राष्ट्रपति चुनाव में मतदन करने की अनुमति नहीं है:
- लोकसभा के मनोनीत सदस्यों को
- राज्यसभा के मनोनीत सदस्यों को
- राज्य विधानसभा के मनोनीत सदस्यों को
- राज्यों की विधानपरिषदों के निर्वाचित एवं मनोनीत सदस्यों को
- राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव से संबंधित मामलों को विधि द्वारा विनियमित करने का अधिकार संसद को प्राप्त है । राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति निर्वाचन अधिनियम के तहत राष्ट्रपति के पद के लिए नामांकन हेतु एक उम्मीदवार के पास कम से कम 50 प्रस्तावक (electors as proposers) एवं 50 अनुमोदक (electors as seconders) ;निर्वाचक (electors) से यहाँ तात्पर्य राष्ट्रपति के निर्वाचक मंड़ल (electoral college) के सदस्यों से है) होने चाहिए ।
- जहाँ तक संभव हो, प्रत्येक राज्य की जनसंख्या एवं विधानसभा के कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या के अनुसार राष्ट्रपति के चुनाव में विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधित्व में एकरूपता होनी चाहिए । साथ ही, सभी राज्यों एवं संघ के मध्य भी समानता होनी चाहिए (अनु-55) । दूसरी शर्त यह सुनिश्चित करती है कि राष्ट्रपति चुनाव के निर्वाचक मंडल में राज्यों के विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों का समग्र मत मूल्य, संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्यों के मत मूल्यों के लगभग बराबर हों । इस प्रकार, राष्ट्रपति राष्ट्र का प्रतिनिधि होने के साथ-साथ विभिन्न राज्यों के लोगों का भी प्रतिनिधि होगा ।
- विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधित्व में एकरूपता सुनिश्चित करने के क्रम में यह प्रावधान किया गया है कि एक राज्य की विधान सभ के प्रत्येक निर्वाचित सदस्य के मत का मूल्य उस राज्य की जनसंख्या को, उस राज्य की विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों एवं 1000 के गुणनफल से प्राप्त संख्या द्वारा भाग देने पर प्राप्त संख्या के समान होता है । सरल शब्दों में निर्वाचक मंड़ल के प्रत्येक सदस्य, जो किसी राज्य विधान सभा का एक सदस्य है, के मतों के मूल्य की गणना निम्नलिखित सूत्र से की जाती है:
- एक विधायक के मत का मूल्य त्र राज्य की कुल जनसंख्या / (राज्य विधानसभा के निर्वाचित कुल सदस्य 1000
- (0.5 से बड़ी भिन्न संख्या को 01 एवं अन्य भिन्नों को शून्य माना जाएगा ।)
- निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से इस मतगणना विधि को और अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है:
- मान लीजिए, अविभाजित आंध्रप्रदेश राज्य की जनसंख्या 37,129,852 और विधानसभा में निर्वाचित सदस्यों की संख्या 276 है । राष्ट्रपति के चुनाव में प्रत्येक निर्वाचित सदस्य द्वारा डाले जाने वाले मतों का मूल्य ज्ञात करने के लिए हम पहले 37,129,852 (राज्य की जनसंख्या) को 276 (कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या) से विभाजित करते हैं और इस से प्राप्त भागफल को 1/1000 से गुणन करते हैं । इससे यह 134,528.449/1000 भागफल प्राप्त होता है । इस प्रकार प्रत्येक निर्वाचित सदस्य के मतों का मूल्य 134,528.449/1000 अर्थात् 135 (यहाँ दशमलव संख्या 0.528 जो 0.5 से अधिक है इसलिए 01 मानी जाएगी) होगा ।
- संसद के प्रत्येक सदन के निर्वाचित सदस्य (MP) के मतों का मूल्य, सभी राज्यों के विधायकों के मतों

अध्याय - 2

बैंकिंग

- बैंक उस वित्तीय संस्था को कहते हैं जो जनता की धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करती है।
- लोग अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने हेतु इन संस्थाओं में जमा करते हैं और आवश्यकता अनुसार समय-समय पर निकालते रहते हैं।
- बैंक इस प्रकार जमा से प्राप्त राशि को व्यापारियों एवं व्यवसायियों को ऋण देकर ब्याज कमाते हैं।

भारत में बैंकिंग

- भारत में स्थापित पहली बैंक Bank of Hindustan थी इसकी स्थापना Alexandey and Company 1770ई. में की थी कुछ समय बाद यह बैंक बन्द हो गई।
- इसके बाद देश में निजी और सरकारी अंशधारियों द्वारा तीन प्रेसीडेन्सी बैंकों की स्थापना की गई - वर्ष 1806 में बैंक ऑफ बंगाल (Bank of Bengal.) , वर्ष 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे (Bank of Bombay) तथा वर्ष 1843 में बैंक ऑफ मद्रास (Bank of Madras) ।
- इन तीनों बैंकों पर बैंक ऑफ मद्रास अपना नियंत्रण रखती थी । बाद में इन बैंकों के कार्यों को सीमित कर दिया गया । वर्ष 1921 में इन तीनों बैंकों को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया (Impe rial Bank of India) की स्थापना की गई और । जुलाई, 1955 को राष्ट्रीयकरण के उपरान्त इसका नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया रख दिया गया ।
- भारत में पहली सीमित देयता वाला भारतीय बैंक अवध कमर्शियल बैंक था जिसकी स्थापना फैजाबाद में वर्ष 1881 में की गयी थी ।
- उसके बाद वर्ष 1894 में लाहौर में पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना हुई जो पहला पूर्ण रूप से प्रथम भारतीय बैंक था ।

भारत में स्थापित प्रमुख बैंक व उनकी स्थापना

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष
द बैंक ऑफ हिन्दुस्तान	1770
बैंक ऑफ बंगाल	1806
बैंक ऑफ बॉम्बे	1840
बैंक ऑफ मुद्रास	1843
इलाहाबाद बैंक	1865
एलाइन्स बैंक ऑफ शिमला	1881
अवध कॉमर्शियल बैंक	1881
पंजाब नेशन बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
पंजाब एंड सिंध बैंक	1908
बैंक ऑफ बडौदा	1909
सैण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911
बैंक ऑफ मैसूर	1913
इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921
भारतीय रिजर्व बैंक	1935
भारतीय स्टेट बैंक	1955

भारतीय रिजर्व बैंक

- भारत का केन्द्रीय बैंक है ।
- वर्ष 1930 में केन्द्रीय बैंकिंग जाँच समिति की सिफारिश के आधार पर भारत के केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (R.B.I.) की स्थापना RBI अधिनियम, 1934 के तहत् । अप्रैल , 1935 को 5 करोड़ रुपये की अधिकृत पूँजी से हुई थी ।
- 1 जनवरी, 1949 को भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया । इसके प्रथम गवर्नर सर ओसबोर्न स्मिथ (1935-37) थे ।
- देश के स्वतंत्रता के समय में RBI के गर्वनर सर सी डी . देशमुख (1943-49) थे ।

- रिजर्व बैंक के कार्यों का संचालन केन्द्रीय संचालक मण्डल (Central Borad of Directors) द्वारा होता है ।
- सम्पूर्ण देश में इसे चार भागों में बाँटा गया है - उत्तरी क्षेत्र , दक्षिणी क्षेत्र , पूर्वी क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र ।
- इसमें प्रत्येक के लिए 5 सदस्यों का एक स्थानीय बोर्ड (Local board) होता है ।
- केन्द्रीय बोर्ड में 1 गवर्नर तथा अधिक से अधिक 4 डिप्टी गवर्नर होते हैं , जिनकी नियुक्ति केन्द्र सरकार पाँच वर्षों के लिए करती है ।
- वर्तमान में RBI के 25वें गवर्नर शक्तिकांत दास (12 दिसम्बर, 2018 से लगातार)है।
- स्थानीय बोर्डों के कार्यालय नई दिल्ली , चेन्नई , कोलकाता और मुम्बई में है ।
- स्थानीय बोर्ड केन्द्रीय बोर्ड के आदेशानुसार कार्य करते हैं ।
- रिजर्व बैंक का प्रधान अथवा केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई में स्थित है ।
- नई दिल्ली , कोलकाता तथा चेन्नई में स्थानीय प्रधान कार्यालय है

RBI के कार्य

<u>भारत में नए नोट जारी करने की व्यवस्था</u>

- एक रुपये के नोट का सभी सिक्कों को छोड़कर रिजर्व बैंक को विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों को जारी करने का एकाधिकारक प्राप्त है ।
- रिजर्व बैंक सरकार के प्रतिनिधि के रूप में एक रुपए के नोटों तथा सिक्कों एवं छोटे सिक्कों का देशे में वितरण का कार्य करता है ।
- करेन्सी नोट जारी करने के लिए वर्तमान में रिजर्व बैंक नोट प्रचालन की न्यूनतम निधि पद्धति (Minimum Reserve System) को अपनाता है । इस पद्धति के अंतर्गत रिजर्व बैंक के पास स्वर्ण एवं विदेशी ऋणपत्र कुल मिलाकर किसी भी समय 200 करोड़ रुपये के मूल्य से कम नहीं होने चाहिए । इनमें स्वर्ण का मूल्य (धातु तथा मुद्रा मिलाकर) 115 करोड़ रुपए से कम नहीं होना चाहिए । यह पद्धति रिजर्व बैंक ने 1957 के बाद अपनाई थी ।

- **NOTE**-नए नोट छापने की एक अन्य व्यवस्था भी हैं परन्तु इसका प्रयोग भारत में नहीं होता यह व्यवस्था अनुपाती आरसी व्यवस्था है (Prahetional Resere system) इसके अन्तर्गत जिस अनुपात में नए नोट का मूल्य बढ़ता हैं उसी अनुपात में रखे गए कोष को बढाना पड़ता है
- **NOTE** – 1000 रुपये के नोटों का परिचालन 8 नवम्बर, 2016 से बंद हो गया है।

NOTE- सिक्के सीमित विधि ग्राह्य (Limited Legal Tender) हैं । भारत में कागजी नोट असीमित विधि ग्राह्य (Unlimited Le gal Tender) हैं । इसका अर्थ यह है कि भुगतान का निपटारा करने के लिए सिक्कों का प्रयोग केवल एक सीमा तक ही किया जा सकता है । इसके विपरीत , कागजी नोटों के रूप में भुगतानों का निपटारा करने हेतु उनका प्रयोग असीमित मात्रा में किया जा सकता है ।

सिक्कों का उत्पादन

- सिक्कों का उत्पादन करने तथा सोने और चाँदी की परख करने एवं तमगों का उत्पादन करने के लिए भारत सरकार की पाँच टकसालें मुम्बई , अलीपुर (कोलकाता) , सैफाबाद (हैदराबाद) , चेलापिल्ली (हैराबाद) तथा नोएडा में स्थित है ।
- टकसालों में सिक्कों के अलावा विभिन्न प्रकार के पदकों (मेडल) का भी उत्पादन किया जाता है ।
- **NOTE**- 25 पैसे तथा इससे कम मूल्य के सभी सिक्कों का परिचालन जुलाई, 2011 से बंद हो गया है । अर्थात देश में अब 50 पैसे का सिक्का सबसे कम मूल्य की विधिग्राह्य मुद्रा है ।

I. इण्डिया सिक्योरिटी प्रेस , नासिक (महाराष्ट्र) –

- भारत प्रतिभूति में डाक सम्बन्धी लेखन सामग्री , डाक एवं डाक - भिन्न टिकटों , अदालती एवं गैर - अदालती स्टाम्पों , बैंकों (RBI तथा SBI) के चेकों , बॉण्डों , राष्ट्रीय बचत पत्रों आदि के अलावा राज्य सरकारों , सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों , वित्तीय निगमों आदि के प्रतिभूति पत्रों की छपाई की जाती है ।

2. सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस , हैदराबाद

- सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस हैदराबाद की स्थापना दक्षिण राज्यों की डाक लेखन सामग्री की मांगों को पूरा करने के लिए की गई तथा यहाँ पूरे देश की केन्द्रीय उत्पाद शुल्क स्टाम्प की छपाई भी होती है ।

3. करेन्सी नोट प्रेस , नासिक (महाराष्ट)

- नोट प्रेस 1 , 2 , 5 , 10 , 50 , 100 , 500 तथा 2000 रुपये के बैंक नोट छापती है और उनकी पूर्ति करती है ।

4. बैंक नोट प्रेस , देवास (मध्य प्रदेश)

- देवास स्थित बैंक नोट प्रेस 20 , 50 , 100 , 500 और 2000 रुपये के उच्च मूल्य वर्ग के नोट छापती है ।
- बैंक नोट प्रेस का स्थाही का कारखाना प्रतिभूति पत्रों की स्थाही का निर्माण करता है ।

5 . साल्बोनी (पं . बंगाल) तथा मैसूर (कर्नाटक) के भारतीय रिजर्व बैंक ने दो नयी एवं अत्याधुनिक करेन्सी नोट प्रेस स्थापित की गयी है । यहाँ भारतीय रिजर्व बैंक के नियन्त्रण में करेन्सी नोट छापे जाते हैं ।

6. सिक्योरिटी पेपर मिल , होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

बैंक और करेन्सी नोट कागज तथा गैर - ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर की छपाई में प्रयोग होने वाले कागज का उत्पादन करने के लिए सिक्योरिटी पेपर मिल होशंगाबाद में 1967-68 में चालू की गई थी ।

सरकार के बैंकर का कार्य करना

- सरकारी बैंकर के रूप में यह निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करता है-

(i) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से धन प्राप्त करना और इनके आदेशानुसार इनका भुगतान करना ।

(ii) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से जनता से ऋण प्राप्त करना ।

(iii) सरकारी कोषों का स्थानान्तरण करना ।

(iv) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के लिए विदेशी विनिमय का प्रबन्ध करना ।

(v) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को आर्थिक सलाह देना ।

रिजर्व बैंक बैंकों का बैंक

- बैंकों के बैंक के रूप में यह निम्नलिखित कार्य करता है

(i) रिजर्व बैंक व्यापरिक बैंकों का अंतिम ऋणदाता है ।

(ii) रिजर्व बैंक बैंकों की साख नीति का नियंत्रण रखता है ।

(iii) वर्ष 1949 के बैंकिंग नियमन अधिनियम के अंतर्गत रिजर्व बैंक को व्यापक अधिकार प्राप्त है ; जैसे - अनुसूचित बैंक का निरीक्षण करना , नए बैंकों की स्थापना के लिए अनुज्ञा - पत्र प्रदान करना , आदि ।

विदेशी विनिमय कोष का संरक्षण करना

- केन्द्रीय बैंक देश के विदेशी विनिमय कोष के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता है । केन्द्रीय बैंक विदेशी मुद्राओं के कोष संचित रखता है जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विकास तथा विनिमय दर की स्थिरता को बनाए रखा जा सके ।

कृषि साख की व्यवस्था करना

- कृषि साख की व्यवस्था करने के लिए रिजर्व बैंक ने एक कृषि साख विभाग की स्थापना की है । इस विभाग का मुख्य कार्य कृषि साख से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में अनुसंधान करना है ।

समाशोधन - गृह का कार्य करना

- रिजर्व बैंक देश का केन्द्रीय बैंक है । यह बैंकों को समाशोधन गृह (Clearing House) की सुविधा प्रदान करता है । यह कार्य करके रिजर्व बैंक सदस्य बैंकों में रुपए के स्थानान्तरण को सुविधाजनक बनाता है

साख का नियंत्रण करना

- साख तथा मुद्रा पर नियंत्रण करने के लिए रिजर्व बैंक देश में मुद्रा तथा साख की माँग व पूर्ति के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है । देश में मौद्रिक स्थायित्व लाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्य है ।

औद्योगिक वित्त की व्यवस्था में सहायता करना

- रिजर्व बैंक ने ' औद्योगिक वित्त निगम ' तथा ' राज्य वित्त निगमों ' के बड़ी मात्रा में अंश खरीद रखे हैं । आवश्यकता पड़ने पर वह दीर्घकालीन व मध्यकालीन ऋण भी प्रदान करता है ।

आर्थिक व्यवस्था से सम्बन्धित समक एकत्रित करना

- रिजर्व बैंक मुद्रा , साख , बैंकिंग , वित्त , कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन आदि से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करता है और उन्हें प्रकाशित करता है । ये आँकड़े देश की विभिन्न आर्थिक समस्याओं को समझने में सहायता देते है ।

भारत की वर्तमान करेन्सी व्यवस्था

- भारतीय करेन्सी व्यवस्था की इकाई रुपया है जिसमें कागजी करेन्सी और सिक्के दोनों प्रचलित हैं । सिक्के एवं एक रुपये का नोट (जिस पर वित्त सचिव , भारत सरकार के हस्ताक्षर होते हैं) भारत सरकार निर्गत करती है , जबकि 2 ,5 ,10,20,50, 100, 500 तथा 2,000 रुपये के करेन्सी नोट भारतीय रिजर्व बैंक निर्गत करता है ।

साख नियंत्रण (Control of Credit)

- रिजर्व बैंक साख के नियंत्रण एवं नियमन हेतु दो प्रकार के का प्रयोग करता है
  (A) परिमाणात्मक या मात्रात्मक साख नियंत्रण
  (B) गुणात्मक साख नियंत्रण

(A) परिमाणात्मक विधियाँ

- इनके द्वारा एक अर्थव्यवस्था की कुल मुद्रा पूर्ति / साख को प्रभावित किया जा सकता है । इनके द्वारा साख के प्रवाह को न तो अर्थव्यवस्था के किसी खास क्षेत्र की ओर निर्देशित किया जाता है और न ही सीमित किया जाता है । ये विधियाँ निम्न हैं-

बैंक दर (Bank Rate)	• भारतीय रिजर्व बैंक जिस ब्याज दर पर व्यावसायिक बैंकों को दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराता है, बैंक दर कहलाता है । • **प्रभाव-** बैंक दर में परिवर्तन का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों की ब्याज दर पर पड़ता है । इसके अन्तर्गत रिजर्व बैंक के पास अनुसूचित बैंकों की कुल वैधानिक जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत के बराबर उनके मूल कोटे निर्धारित कर दिया गया । • निर्धारित कोटे की सीमा तक रिजर्व बैंक से बैंक दर पर ऋण लिया जा सकता है । इससे अधिक ऋण देने पर बैंक दर के अतिरिक्त ब्याज की दंड दर (Penal rate) देनी पड़ती है । • बैंक दर में वृद्धि या कमी व्यावसायिक बैंक द्वारा आवंटित ऋणों पर ब्याद दर कम या ज्यादा करने के लिए होता है । • **NOTE :** बेस रेट वह दर है जिसके नीचे अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक किसी भी तरह का ऋण नहीं दे सकते हैं । यह वर्ष 2010 में पूर्व प्रचलित प्राइम लैंडिंग रेट नोट (PLR) के स्थान पर अपनाया गया है
नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio)	• प्रत्येक व्यापारिक बैंक अपनी कुछ जमाओं का एक निर्धारित प्रतिशत रिजर्व बैंक के पास सदैव नकद रूप में रखता है जिसे नकद आरक्षण अनुपात (CRR) कहते हैं । • रिजर्व बैंक इस नकद पर कोई ब्याज बैंक को नहीं देता है । जब रिजर्व बैंक साख मुद्रा वृद्धि करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में कमी कर देता है । और यदि वह साख मुद्रा में कमी करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में वृद्धि कर देता है ।
वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio)	• प्रत्येक बैंक को कुल जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप में या अन्य तरल परिसम्पत्तियों के रूप में (सोना

कमेटी ने पीडीएस प्रणाली की एक अत्यंत ही चौंका देने वाली तस्वीर सामने रखी है, यद्यपि सभी लोगों ने, जिसने पीडीएस को थोड़ा भी नजदीक से देखा है यह निष्कर्ष पाया है कि कमेटी ने पी डी एस को सबसे अधिक भ्रष्ट प्रणाली की संस्था के रूप में पाया है।

कमेटी ने पाया है कि पीडीएस खाद्यानों के बड़े पैमाने पर कालाबाजारी हो रही है पी डी एस खानदान गरीबों तक नहीं पहुंचते हैं जो बहुत अधिक इनकी आवश्यकता में होते हैं।

यह गरीब न तो उचित मात्रा में और न ही उचित गुणवत्ता के खाद्यानों को पीडीएस से पाते हैं कभी-कभी तो यह इतने खराब किस्म के होते हैं कि वह खाने योग्य ही नहीं होते हैं।

अध्याय – 9

ई-कॉमर्स

ई-कॉमर्स (E-commerce)

- ई-कॉमर्स (E-commerce) जिसे इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स भी कहते हैं, इंटरनेट तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से उत्पाद, और सेवाएं खरीदना-बेचना तथा ऑनलाइन मनी ट्रांसफर करना एवं डेटा शेयर करने की प्रक्रिया है। ई-कॉमर्स में फिजिकल प्रोडक्ट्स के अलावा इलेक्ट्रॉनिक गुड्स तथा सेवाओं का व्यापार भी होता है।
- अगर और आसान शब्दों में कहें तो ऑनलाइन शॉपिंग करना ही ई-कॉमर्स कहलाता है। आप फिजिकल प्रोडक्ट (फर्नीचर, किचन आइटम, इंडस्ट्री मशीनरी आदि), डिजिटल गुड्स (ई-बुक्स, ई-मैगजीन्स, ई-पेपर, विडियो कोर्स, ग्राफिक्स, पेंटिग्स आदि) एवं सेवाएं (कंसल्टेंसी, टीचिंग, राइटिंग, हेल्थ एडवाइस, लिगल एडवाइस आदि) ऑनलाइन खरीद-बेच सकते हैं।
- अमेजन, फ्लिपकार्ट, वॉलमार्ट, बिगबास्केट, अलिबाबा, पेटीएम मॉल, मिंत्रा, स्नेपडील, शॉपक्लूज आदि ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस ने ऑनलाइन शॉपिंग को व्यापक स्तर पर पहुँचा दिया है और अपने ग्राहकों तक आसान पहुँच सुनिश्चित भी की है। इससे ग्राहकों के साथ-साथ मर्चेंट्स को भी लाभ हुआ है।
- ई-कॉमर्स वेबसाइट तथा मोबाइल एप्लिकेशन के जरिए किया जाता है। जिसमें पेमेंट गेटवे, SSL Certificates, Inventories, Taxes, Encrypting Technologies आदि इंटीग्रेटेड कर जाती है ताकि शॉपिंग के दौरान ग्राहक के साथ कोई धोखाधड़ी ना हो पाए और उसे सारी सुविधाएँ एक ही जगह पर उपलब्ध कराई जा सके।

ई-कॉमर्स का इतिहास – History of E-commerce in Hindi?

- 11अगस्त, 1994 कि एक दोपहर को 'फिल ब्रेंडनबर्जर' ने अपना कम्प्यूटर शुरु किया और NetMarket (एक ऑनलाइन स्टोर) से स्टिंग (Sting) की सीडी को ख़रीदा जिसका भुगतान

क्रेडिट कार्ड से किया गया। इस सीडी का नाम 'Ten Summoners' Tales' था। इस घटना ने इतिहास रचा था। और आज भी इसे ही असल ई-कॉमर्स ट्राजेंक्शन माना जाता है। क्योंकि इस ऑनलाइन ट्राजेंक्शन के दौरान पहली बार Encryption Technology का उपयोग ऑनलाइन शॉपिंग मे हुआ था। जो आज आम बात हो गई है।

➢ **E-commerce History**

- वर्ष 1979 – माइकल एल्ड्रिच ने इलेक्ट्रॉनिक शॉपिंग का आविष्कार किया
- वर्ष 1981 – Thomson Holidays UK पहला B2B ऑनलाइन शॉपिंग सिस्टम शुरु हुआ
- वर्ष 1982 – फ्रांस टेलिकॉम नें Minitel को ऑनलाइन ऑर्डर लेने के लिए शुरु किया
- वर्ष 1982 – बोस्टन कम्प्युटर एक्सचेंज ने अपना पहला ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म लॉन्च किया
- वर्ष 1990 – टिम बर्नर्स ली ने पहला वेब ब्राउजर का कोड लिखा
- वर्ष 1992 – बुक स्टैक्स अनलिमिटेड ने किताबों का पहला मार्केटप्लेस शुरु किया जिसकी वेबसाईट www.books.com थी। अब यह वेबसाईट www.barnesandnoble.com हो गई है।
- वर्ष 1994 – नेटस्केप ने नेटस्केप नेविगेटर शुरु किया
- वर्ष 1994 – NetMarket से Ten Summoner's Tales पहली सुरक्षित खरीदारी बनी जिसे क्रेडिट कार्ड के माध्यम से खरीदा गया
- वर्ष 1995 – eBay तथा Amazon ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाईट शुरु हुई
- वर्ष 1998 – PayPal को ऑनलाइन पेमेंट सिस्टम के रूप में शुरु किया गया
- वर्ष 1999 – Alibaba.com की शुरुआतवर्ष 2000 – गूगल ने AdWords शुरु की
- वर्ष 2005 – एमेजन ने अपने ग्राहकों के लिए Amazon Prime सेवा शुरु की
- वर्ष 2005 – दस्तकारी तथा पुराने कीमती सामात (Vintage Goods) ऑनलाइन बेचने-खरिदने के लिए Esty मार्केटप्लेस शुरु हुआ
- वर्ष 2009 – ऑनलाइन स्टोरफ्रंट प्लेटफॉर्म BigCommerce शुरु हुआ
- वर्ष 2009 – Square, Inc. की शुरुआत हुई
- वर्ष 2011 – Google Wallet को ऑनलाइन पेमेंट सिस्टम के लिए शुरु किया गया
- वर्ष 2011 – फेसबुक ने Sponsored Stories नाम से विज्ञापन शुरु किया
- वर्ष 2011 – Stripe की शुरुआत
- वर्ष 2014 – Apple Pay को मोबाइल पेमेंट के लिए शुरु किया गया
- वर्ष 2014 – Jet.com की शुरुआत
- वर्ष 2017 – Instagram Shoppable Posts पेश की गई
- वर्ष 2020 – रिलायंस रिटेल द्वारा Jio Mart की शुरुआत की गई।

ई-कॉमर्स का प्रकार – Types of E-commerce in Hindi?

ई-कॉमर्स मुख्य रूप से सात Models of E-commerce से संचालित होता है। जिनका वर्णन इस प्रकार है।

1. Business to Business (B2B)
2. Business to Consumer (B2C)
3. Consumer to Consumer (C2C)
4. Consumer to Business (C2B)
5. Government to Business (G2B)
6. Business to Government (B2G)
7. Consumer to Government (C2G)

Business to Business Model

- जब ऑनलाइन बिजनेस दो से अधिक बिजनेस कंपनियों, संस्थानों, एजेंसियों के बीच किया जाता है तो यह Business to Business Model (B2B) कहलाता है।
- क्योंकि इस प्रोसेस में अंतिम उपभोक्ता आप या हम नहीं होते है। बल्कि, एक दूसरा व्यापार ही होता है जो दूसरे व्यापार से अपनी जरूरत का सामान ऑनलाइन खरीदता है। इस बिजनेस मॉडल में उत्पादक, थोक व्यापारी और खुदरा व्यापारी शामिल होते है।
- यहाँ पर व्यापारी अधिकतर कच्चा सामान, रिपैकिंग होने वाला सामान खरीदते है और सेवाओं के रूप में सॉफ्टवेयर तथा कानूनी सलाह शामिल होती है। मगर यहीं तक सीमित नहीं है।

Business to Consumer Model

- ई-कॉमर्स का सबसे प्रचलित रुप B2C है। जब आप एक प्रकाशक से अपने लिए कोई किताब ऑर्डर करते है तो यह शॉपिंग इसी बिजनेस मॉडल में शामिल होती है। क्योंकि यहाँ पर ट्रांजेक्शन सीधा बिजनेस से उपभोक्ता के बीच होता है।

Consumer to Consumer Model

- यह मॉडल शुरुआत का बिजनेस मॉडल है। इस ई-कॉमर्स बिजनेस मॉडल में एक ग्राहक दूसरे ग्राहक से ऑनलाइन ट्रांजेक्शन करता है। eBay, Amazon, OLX पर आपको कुछ इसी तरह का मॉडल देखने को मिलता है। जहाँ पर एक ग्राहक अपना पुराना सामान तथा नया सामान भी सीधे ग्राहक को बेचता है।

Consumer to Business Model

- जब एक ग्राहक अपना सामान अथवा सेवाएं सीधे एक बिजनेस को बेचता है तो यह ई-कॉमर्स मॉडल C2B कहलाता है।
- एक फोटोग्राफर, गायक, कॉमेडियन, नृतक, यूट्युबर आदि अपने दर्शकों के हिसाब से बिजनेस से उत्पाद प्रचार के शुल्क ले सकते है और अपनी कुछ सेवाएं रॉयल्टी के आधार पर भी उपलब्ध करा सकते है।
- ये सभी कार्य Consumer to Business Model के अंतर्गत आते है। पेशेवर लोग इस बिजनेस मॉडल से खूब पैसा कमाते है।

Government to Business Model

- इस बिजनेस मॉडल का सबसे अच्छा उदाहरण है ई-गवर्नेंस। जिसके तहत सरकारे अथवा प्रशासनिक संस्थान अपनी सेवाएं व्यापारिक संस्थानों को इंटरनेट के द्वारा उपलब्ध करवाती है।
- इन सेवाओं की सूची देश काल के हिसाब से भिन्न हो सकती है। कानूनी दस्तावेज, पंजिकरण, सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, नौकरी प्रावधान तथा अन्य व्यापारिक सेवाएं सरकारें ऑनलाइन मुहैया करा रही है। जिससे सरकार और व्यापारिक प्रतिष्ठानों का समय और पूंजी दोनों बच रहे है।

Business to Government Model

- जब सरकारें अपनी जरुरत का कुछ सामान अथवा सेवाएं बिजनेस से ऑनलाइन खरीदती है तो इसे B2G ई-कॉमर्स मॉडल कहा जाता है। उदाहरण, किसी लोकल सरकारी एजेंसी को अपने अधिकार क्षेत्र में CCTV Cameras लगवाने है तो वह इसके लिए किसी कैमरा स्टोर से कैमरा खरीदती है। और उन्हे लगवाने का ठेका भी किसी बिजनेस को दे सकती है। यह सब कार्य इसी मॉडल में आते है।
- भारत देश में इसका सबसे अच्छा उदाहरण बाबा रामदेव का लोकप्रिय स्वदेशी पंतजली ब्रांड (निजी व्यापार) है जो अपने उत्पाद भारतीय सेना (सरकारी संस्था) को बेच रहा है। यह बिजनेस मॉडल B2G के अंतर्गत ही है।

Consumer to Government Model

- ई-गवर्नेंस सेवा यहाँ भी लागु होती है। क्योंकि एक आम नागरिक का भी बहुत सारा सरकारी कामकाज रहता है। जिसके लिए उसे सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते है।
- मगर जब सरकारी सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध हो जाती है तो ग्राहक सीधा वेबसाइट या एप के माध्यम से इन सेवाओं का लाभ ले सकता है। ई-मित्र सेवा, उमंग, ई-फिलिंग, डिजिलॉकर, फास्टैग आदि इसी मॉडल के उदाहरण है।

ई-कॉमर्स के फायदें

- ई-कॉमर्स का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको सामान खरीदने के लिए दुकानदार या स्टोर तक नहीं जाना है बल्कि सामान खुद आप तक आ जाएगा। आप बस ऑर्डर कीजिए और भुगतान करके डिलिवरी एड्रेस चुन लिजिए और हो गई खरीदारी। लेकिन इसके अलावा भी बहुत सारे अन्य फायदें एक ग्राहक को होते है जिनका विवरण इस प्रकार है।

I विश्वव्यापी (Global Reach)

- आप ई-कॉमर्स की सहायता से पूरी दुनिया में पहुँच बना लेते है। यदि आप एक विक्रेता है तो आपके लिए नये ग्राहक ढूँढने की जरुरत नहीं रहती है। क्योंकि पूरी दुनिया आपका ग्राहक बनने के लिए तैयार है। और ग्राहक के लिए दुनियाभर के स्टोर सामान बेचने के लिए उपलब्ध रहते है। वह अपनी पसंद का कुछ भी सामान आराम से देखकर और जानकारी करके खरीद सकता है।

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान CET (Graduation level)" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /

संपर्क करें – 8504091672, 8233195718,9694804063, 7014366728

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-cet-notes-graduation
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/kmk3lu

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO